



75  
आज़ादी का  
अमृत महोत्सव  
1947-2022

# सामाजिक विज्ञान

## अभ्यास पुस्तिका

वेद-भूषण - III वर्ष / प्रथमा - III वर्ष / कक्षा आठवीं

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद संस्कृत शिक्षा बोर्ड

(शिक्षा मन्त्रालय भारत सरकार द्वारा स्थापित एवं मान्यता प्राप्त)

अव सुजा वनस्पते देव देवेभ्यो हविः ।

आप ओषधीरुत नोऽवन्तु घौर्वना गिरयो वृक्षकेशाः ।

दश कूप समा वापी, दशवापी समोहदः ।

दशहद समः पुत्रो, दशपुत्र समो द्रुमः ॥

शुनं वाहाः शुनं नरः शुनं कृपतु ल्यङ्गलम् ।

सा नः पयस्वती दुहामुत्तरामुत्तरां समाम् ।

कृते योनौ वपतेह बीजम् ।

अचिक्कददुहाहरिर्महाश्रमिन्नो नदर्शतः ॥ स ऽ सुर्वणदिद्युतदुधिर्निधिः ।

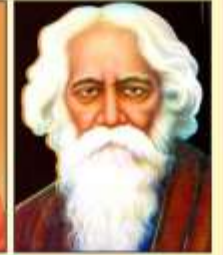
निधिं विभ्रती बहुधा गृहा वसु मणिं हिरण्यं पृथिवी ददातु मे ।

वसुनि नो वसुदा रासमाना देवी दधातु सुमनस्यमाना ॥

तस्यै हिरण्यवक्षसे पृथिव्या अकरं नमः ।

त्वं नो अग्ने सनये धनानां यशसं कारु कृणुहि स्तवानः ।

ऋध्याम कर्मापसा नवेन देवेद्यावापृथिवी प्रावतं नः ।



महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन (म.प्र.)

(शिक्षा मन्त्रालय, भारत सरकार)

Phone : (0734) 2502266, 2502254, E-mail : msrvvpujn@gmail.com, website - www.msrvvp.ac.in

## विषयानुक्रमणिका

क्रम संख्या	अध्याय का नाम	पृष्ठ संख्या
	<b>भूगोल</b>	
1	संसाधन	3-6
2	कृषि	7-8
3	खनिज और शक्ति संसाधन	9-11
4	उद्योग	12-13
	<b>इतिहास</b>	
5	भारत में अंग्रेजी शासन की स्थापना	14-17
6	1857 की क्रान्ति	18-20
7	औपनिवेशिक भारत में शिक्षा	21-22
8	औपनिवेशिक भारत में उद्योग एवं नगरीकरण	23-24
9	औपनिवेशिक भारत में समाज सुधार आन्दोलन	25-26
10	औपनिवेशिक भारत में चित्रकला	27-28
11	भारत में आदिवासी	29-30
12	राष्ट्रीय आन्दोलन (1885 ई.-1947 ई. तक)	31-34
13	स्वतन्त्र भारत	35-36
	<b>सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन</b>	
14	भारतीय संविधान	37-39
15	हमारी संसद	40-41
16	न्यायपालिका	42-43
17	जनसुविधाएँ	44-45
	परिशिष्ट	46-47

### अध्याय-1

#### संसाधन

- हर वह वस्तु जिससे हमारी आवश्यकताएँ पूरी होती हैं, उसे हम संसाधन कहते हैं। प्रौद्योगिकी और समय ये दोनों ऐसे कारक हैं, जो किसी भी वस्तु आदि को संसाधन में बदलने की क्षमता रखते हैं।
- संसाधनों को तीन भागों में बाँटा जा सकता है-  
क. प्राकृतिक संसाधन    ख. मानव निर्मित संसाधन    ग. मानव संसाधन।
- वे संसाधन जो हमें प्रकृति से प्राप्त हुए हैं, प्राकृतिक संसाधन कहलाते हैं, जैसे वायु, जल, मिट्टी, खनिज इत्यादि। प्राकृतिक संसाधनों को दो भागों में बाँटा गया है- 1. नवीकरणीय 2. अनवीकरणीय।
- जो संसाधन पुनः-पुनः उपयोग में लिए जा सकते हैं व जिनका निर्माण लगातार होता रहता है, उसे नवीकरणीय संसाधन कहते हैं। जैसे- जल, मिट्टी, पवन ऊर्जा, सौर ऊर्जा इत्यादि।
- जिन संसाधनों का पुनः निर्माण नहीं किया जा सकता है या जो एक बार उपयोग के पश्चात नष्ट हो जाते हैं, अनवीकरणीय संसाधन कहलाते हैं, जैसे- कोयला, प्राकृतिक गैस, पेट्रोलियम पदार्थ, इत्यादि।
- वे प्राकृतिक संसाधन, जिन्हें मानव ने कला एवं तकनीकी के माध्यम से आवश्यकतानुसार नये रूप एवं आकार दिये हैं मानव निर्मित संसाधन कहलाते हैं, जैसे- घर, विद्युत उपकरण इत्यादि।
- संसाधनों के निर्माण एवं विकास में लोगों की कार्य कुशलता में अपेक्षित सुधार करना ही मानव संसाधन और विकास कहलाता है। शिक्षा, प्रशिक्षण और चिकित्सा सेवाओं में निवेश के कारण लोग भी मानव संसाधन के रूप में परिवर्तित हो जाते हैं।
- किसी कार्य करने या वस्तु निर्माण में प्रयुक्त नवीनतम ज्ञान और कौशल प्रौद्योगिकी कहलाता है।
- संसाधन संरक्षण से आशय संसाधनों का सतर्कता पूर्वक उपयोग करते हुए नवीकरण के लिए समय देने से है। संसाधनों का भविष्य के लिए उपयोग हेतु संरक्षण एवं सन्तुलन बनाये रखना 'सतत पोषणीय विकास' कहलाता है।
- भूपृष्ठ के कुल क्षेत्रफल का लगभग 29% भाग भूमि है। भारत में कुल क्षेत्रफल का 57% कृषि योग्य भूमि, 4% चरागाह भूमि, 24.62% वन भूमि और 17% अन्य उपयोगी भूमि है। विश्व की 90% जनसंख्या भूमि के 30% भाग पर ही निवास करती है।
- पृथिवी की ऊपरी सतह, जो चट्टानों की टूट-फूट व पदार्थों के सड़ने-गलने से बनती है, भूमि कहलाती है, जैसे- समतल, उबड़-खाबड़, पर्वतीय, दलदलीय, बंजर, रेतीली भूमि आदि।
- ऐसी भूमि जिस पर किसी एक व्यक्ति या व्यक्तियों का स्वामित्व होता है, जिसे वे कभी भी खरीद व बेच सकते हैं अथवा उस पर कृषि व उद्योग आदि स्थापित कर सकते हैं, निजी भूमि कहलाती है।

- ऐसी भूमि जिस पर किसी समुदाय या सरकार का आधिपत्य होता है और उसका उपयोग मुख्यतः जनहित के कार्यों के लिए किया जाता है, सामुदायिक भूमि कहलाती हैं।
- भूमि का उपयोग भौतिक कारकों जैसे- मिट्टी, खनिज, जलवायु, स्थलाकृति और जल की उपलब्धता के आधार पर निश्चित किया जाता है। भूमि का उपयोग हम अनेक कार्यों जैसे- कृषि, वानिकी, खनन, सड़क निर्माण व फैक्ट्रियाँ लगाना आदि लिए करते हैं।
- पृथिवी के धरातल पर बारीक कणों की पतली परत को मृदा या मिट्टी कहते हैं। मृदा का निर्माण चट्टानों से प्राप्त खनिजों और जैव पदार्थ (ह्यूमस) से होता है। मृदा निर्माण के पाञ्च कारक तत्व- जनक शैलें, जलवायु, उच्चावच, जैविक क्रिया, और समय, मिलकर मृदा का निर्माण करते हैं।
- रङ्ग के आधार पर मृदा मुख्य रूप से चार प्रकार की होती है- लाल मृदा, पीली मृदा, काली मृदा और भूरी मृदा। प्रकृति के आधार पर मृदा मुख्य रूप से चार प्रकार की होती है- दोमट मृदा, रेतीली मृदा, क्षारीय मृदा एवं लवणीय मृदा।
- मृदा के निम्नीकरण से तात्पर्य भूमि में पेड़ पौधों तथा फसलों की वृद्धि के लिए आवश्यक प्राकृतिक पोषक तत्वों की कमी होने से है।
- मृदा के निम्नीकरण के मुख्य कारण- खनन कार्य, वनोन्मूलन, अत्यधिक पशुचारण, अधिक सिंचाई, औद्योगिक जल निकासी, अपरदन, कीटनाशकों का अधिक प्रयोग, भूस्खलन व बाढ़ हैं।
- जल एक महत्वपूर्ण नवीकरणीय प्राकृतिक संसाधन है। जल के वे स्रोत, जो पृथिवी के सभी जीवों लिए उपयोगी हैं, जल संसाधन कहलाते हैं।
- वाष्पीकरण, वर्षण और बहाव तथा महासागरों में चक्रण द्वारा जल निरन्तर गतिशील रहता है, जो जल चक्र कहलाता है।
- भूगर्भ का गिरता जल स्तर एवं जल की बर्बादी और प्रदूषण जल उपलब्धता की प्रमुख समस्याएँ हैं। वर्ष 2018 में नीति आयोग द्वारा जारी 122 देशों की जल गुणवत्ता सूची में भारत 120 वें स्थान पर है।
- अथर्ववेद में उल्लेख है कि- "अप्स्वन्तरमृतमप्सु भेषजम्" (1.4.4) अर्थात् जल में औषधीय गुण विद्यमान हैं। "क्षयन्तीश्चर्षणीनाम्।" (1.5.4) अर्थात् जल हमारे जीने का एकमात्र सहारा है।
- घर की छत के वर्षा जल का संग्रहण और उस जल को उपयोग में लेना वर्षा जल संग्रहण कहलाता है। औसतन दो घण्टे की वर्षा से 8000 लीटर को संग्रहीत किया जा सकता है।
- उदयपुर को 'झीलों की नगरी' कहते हैं। एशिया महाद्वीप की मीठे पानी की मानव निर्मित सबसे बड़ी झील 'जयसंमद' है।
- पृथिवी का वह भाग जिस पर जीव पाये जाते हैं, उसे जैव मण्डल कहते हैं। इस जैव मण्डल में जैव विविधता संरक्षित रहती है। जैव विविधता से तात्पर्य किसी क्षेत्र विशेष में पाये जाने वाले जीव-जन्तुओं और वनस्पति तथा उनकी जातीय एवं प्रजातीय विविधता से है।

- प्राकृतिक वनस्पति और वन्य जीवन पृथिवी के स्थलमण्डल, जलमण्डल और वायु मण्डल के मध्य जुड़े एक संकरे क्षेत्र में पाये जाते हैं। सभी जीवों का जीवन एक दूसरे पर निर्भर होता है, जीवन आधारित इस तन्त्र को पारितन्त्र कहते हैं।
- वनस्पतियों की वृद्धि का आधार मुख्यतः तापमान और आर्द्रता है। विश्व की वनस्पतियों को चार श्रेणियों में रखा गया है- वन, घास स्थल, गुल्म और टुण्ड्रा।
- भारी वर्षा वाले क्षेत्रों में बड़े वृक्ष पाए जाते हैं। जहाँ आर्द्रता कम होती है वहाँ वृक्षों के आकार और सघनता में कमी हो जाती है।
- सामान्य वर्षा वाले भागों में छोटे वृक्ष और घास उगती हैं, जिनसे घास स्थलों का निर्माण होता है। न्यून वर्षा वाले क्षेत्रों में कटीली झाड़ियाँ और गुल्म पाए जाते हैं। इन क्षेत्रों में पौधों की जड़ें गहरी होती हैं।
- भारतीय वन सर्वेक्षण (एफ.एस. आइ) की "इंडिया स्टेट ऑफ फॉरेस्ट रिपोर्ट 2021" की रिपोर्ट के अनुसार भारत में लगभग 8,09,537 वर्ग किमी क्षेत्र में वन हैं।
- वर्तमान में भारत के लगभग 24.62 प्रतिशत भू-भाग पर वन हैं, जो विश्व के कुल भू-भाग का लगभग 2.4% भाग है। जबकि किसी भी देश के 33% भू-भाग पर वन होने चाहिए।
- वन्य जीव जङ्गली जीवों की वह श्रेणी है, जो प्राकृतिक आवासों में रहते हैं। शेर, बाघ, तेन्दुआ, जिराफ, नील गाय, जङ्गली सुअर, जरख, लोमड़ी, खरगोश, सेही, गीदड़, आदि वन्य जीवों की श्रेणी हैं।
- भारत सरकार द्वारा वन और वन्य जीवों के संरक्षण के लिए 1972 ई. में अधिनियम बनाया था। इस कानून के द्वारा वन और वन्य जीवों सुरक्षा के लिए अनेक कार्य किए गए हैं। जैसे- अवैध शिकार पर प्रतिबन्ध, वन्यजीवों के क्रय-विक्रय पर रोक आदि।
- वन्यजीव (संरक्षण) संशोधन विधेयक 2021 सरकार द्वारा बनाया गया है, जिसमें संरक्षित प्रजातियों की सहायता में वृद्धि और The Convention of International Trade in Endangered Species of Wild Fauna and Flora (CITES) को लागू करने का प्रयास करता है।
- CITES वन्यजीवों और वनस्पतियों की संकटापन्न प्रजातियों के अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार पर कन्वेंशन एक अन्तर्राष्ट्रीय समझौता है। भारत 18 अक्टूबर, 1976 ई. में CITES समझौते में शामिल हुआ था।
- राष्ट्रीय उद्यानों एवं वन्य जीव अभयारण्यों की स्थापना कर केन्द्र व राज्य सरकारों ने वन्य जीवों संरक्षण एवं संवर्धन के लिए इनके प्राकृतिक आवासों को सुरक्षित किया है। साथ ही इन क्षेत्रों में मानव गतिविधियों पर रोक लगाई है।
- कान्हा राष्ट्रीय उद्यान, (मध्यप्रदेश) रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान, (राजस्थान) कार्बेट नेशनल पार्क (उत्तराखण्ड), काजीरङ्गा राष्ट्रीय उद्यान (असम), गिर राष्ट्रीय उद्यान (गुजरात) आदि प्रमुख राष्ट्रीय उद्यानों एवं वन्य जीव अभयारण्य हैं।

- पशु-अधिकार संगठन, पेटा (People For The Ethical Treatment Of Animals) की स्थापना 1980 ई. में अमेरीका के वर्जिनिया प्रान्त के नॉर्फोल्क नगर में की गई थी। यह संस्था वैश्विक स्तर पर पशुओं के साथ नैतिक व्यवहार करने बल देती है तथा पशु क्रूरता का विरोध करती है।
- आधुनिक काल में राजस्थान का खेजडली वन आन्दोलन जोधपुर (1730 ईस्वी) इतिहास प्रसिद्ध है।
- भारत के प्रसिद्ध पर्यावरणविद् सुन्दरलाल बहुगुणा, कामरेड गोविन्द सिंह रावत, चण्डीप्रसाद भट्ट तथा श्रीमती गौरादेवी के नेतृत्व में चिपको आन्दोलन 1973 ई. में चमोली, उत्तराखण्ड में हुआ था।
- कवयित्री और एक्टिविस्ट सुगाथा कुमारी और केरल शास्त्र साहित्य परिषद नामक संस्था ने साइलेंट 'वैली बचाओ' आन्दोलन चलाया था।
- 1982 ई. में झारखंड राज्य के सिंहभूमि जिले में आदिवासियों ने वनों को बचाने के लिए जङ्गल बचाओ आन्दोलन किया था। 1983 ई. में कर्नाटक के शिमोगा जिले में वनों को बचाने के लिए पाण्डुरङ्ग हेगडे ने आपिको आन्दोलन चलाया गया था।



## अध्याय- 2

### कृषि

- भूमि पर फसलोत्पादन एवं पशुपालन आदि के लिए प्रयुक्त कला एवं विज्ञान को कृषि कहा जाता है। जिस भूमि पर फसलें उगाई जाती हैं, कृषि भूमि कहलाती है।
- अनाज, फल-फूल और सब्जी उत्पादन तथा पशुपालन व्यवसाय आदि को कृषि में सम्मिलित किया जाता है। विश्व की आधी जनसङ्ख्या कृषि पर निर्भर है।
- कृषि के लिए अनुकूल दशा जैसे- स्थलाकृति, मृदा और जलवायु अनिवार्य हैं। कृषि पर द्वितीयक एवं तृतीयक उद्योग भी आधारित हैं।
- कृषि एक तन्त्र के रूप में कार्य करती है। कृषि क्षेत्र में श्रमिक, बीज, उर्वरक, मशीनरी आदि निवेश हैं। जुताई, बुआई, कटाई आदि संक्रियाएँ हैं। अनाज, ऊन, डेरी आदि निर्गत हैं।
- कृषि को दो भागों में बाँटा जा सकता है- (क) निर्वाह कृषि (ख) वाणिज्यिक कृषि।
- वह कृषि, जो कृषक अपने परिवार के भरण-पोषण के उद्देश्य से करता है, निर्वाह कृषि कहलाता है। निर्वाह कृषि में मानव श्रम का अधिक एवं मशीनरी का उपयोग कम किया जाता है।
- स्थानान्तरी कृषि को 'कर्तन और दहन' कृषि के नाम से भी जाना जाता है। इस प्रकार की खेती को उत्तरी-पूर्वी भारत में झूमिंग (झूम) एवं दक्षिण राजस्थान में वालरा कहा जाता है।
- चलवासी पशुचारण कृषि में पशुपालन किया जाता है। इसमें पशुचारक अपने पशुओं जैसे- भेड़, बकरी, ऊँट एवं याक आदि को चारे एवं पानी के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाते हैं। इन पशुओं से पशुचारकों को दूध, मांस, ऊन, खाल व अन्य उत्पाद मिलते हैं।
- वाणिज्यिक कृषि का मुख्य उद्देश्य फसल एवं पशु उत्पादों को बाजार में बेचना होता है। यह कृषि बड़े-बड़े खेतों में की जाती है। इसमें अधिक पूँजी एवं श्रम की आवश्यकता होती है। इस कृषि में सरसों, चना, कपास, जूट, तिलहन, तम्बाकू, गन्ना, चाय, कॉफी, रबड़ आदि फसलें उगाई जाती हैं।
- वाणिज्यिक अनाज कृषि में मुख्यतः ऐसी फसलों को उगाया जाता है, जिन पर उद्योग धन्धे निर्भर हैं।
- मिश्रित कृषि में भूमि का उपयोग विशेषकर अनाज एवं चारे की फसलें उगाने और पशुपालन के लिए किया जाता है।
- बागानी कृषि एक प्रकार की वाणिज्यिक कृषि होती है। इसे रोपण कृषि भी कहा जाता है। इसमें अधिक पूँजी व श्रम की आवश्यकता होती है। यह बड़े-बड़े कृषि उद्योगों के रूप में की जाती है। जैसे- चाय, कहवा, रबड़, फल-सब्जियाँ आदि।
- खरीफ की फसल वर्षा ऋतु में बोई जाती है। बाजरा, मक्का, ज्वार, मूँग, मूँगफली, चावल आदि प्रमुख खरीफ की फसलें हैं। रबी की फसल शीत ऋतु में बोई जाती है। गेहूँ, जौ, चना, सरसों आदि प्रमुख रबी

की फसलें हैं। जायद की फसल ग्रीष्म ऋतु में बोई जाती है। फल, सब्जी, राजमा, बरसीम आदि प्रमुख जायद की फसलें हैं।

- अथर्ववेद के कृषि सूक्त में कृषि कर्म का उल्लेख है- "कृते योनौ वपतेह बीजम्।" (3.17.2) अर्थात् भूमि को जोत कर उसमें बीज बुवाई करने को कृषि का प्राथमिक कर्म कहा गया है। "शुनं वाहाः शुनं नरः शुनं कृषतु लाङ्गलम्।" (3.17.6) अर्थात् किसान एवं बैल हल के द्वारा सुख पूर्वक खेत की जुताई करें।
- "सा नः पयस्वती दुहामुत्तरामुत्तरां समाम्।" (अथर्व. 3.17.4) अर्थात् भूमि हम को हर वर्ष अच्छी उपज प्रदान करे। अन्न को प्राण कहा गया है क्योंकि अन्न सेवन से ही मनुष्य का शरीर बलिष्ठ होता है।
- भारत की अर्थव्यवस्था कृषि आधारित ही है, जिसका सम्बन्ध प्राकृतिक संसाधनों के उत्पादन और उपभोग से है।
- चावल की खेती जलोढ मिट्टी में अधिक होती है। चीन का चावल के उत्पादन में प्रथम स्थान है। भारत में सर्वाधिक चावल पश्चिम बङ्गाल में होता है। इसके अतिरिक्त बिहार, उत्तर प्रदेश, आन्ध्रप्रदेश, छत्तीसगढ़ आदि प्रमुख चावल उत्पादक राज्य हैं।
- गेहूँ की फसल दोमट मिट्टी में अच्छी होती है। विश्व में गेहूँ का सर्वाधिक उत्पादन संयुक्त राज्य अमेरिका में होता है। भारत में उत्तर प्रदेश, पञ्जाब, हरियाणा, राजस्थान, मध्य प्रदेश आदि राज्यों में उत्पादन होता है। गेहूँ उत्पादन की दृष्टि से भारत में उत्तर प्रदेश प्रथम स्थान पर है।
- बाजरे के लिए कम वर्षा की आवश्यकता होती है। इसका उत्पादन राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश में अधिक होता है।
- मक्का के लिए अधिक तापमान व वर्षा की आवश्यकता होती है। संयुक्त राज्य अमेरिका मक्का उत्पादन में प्रथम स्थान पर है। भारत में कर्नाटक, मध्यप्रदेश, बिहार आदि राज्यों में उत्पादित की जाती है।
- पटसन के लिए अधिक वर्षा एवं उच्चताप की आवश्यकता होती है। विश्व में सबसे अधिक पटसन का उत्पादन भारत में होता है। भारत में पश्चिमी बङ्गाल, बिहार उत्पादन में अग्रणी राज्य हैं।
- सूती वस्त्र उद्योग के लिए कपास मुख्य कच्चा माल है। इसके लिए उच्च ताप व हल्की वर्षा की आवश्यकता होती है। विश्व में सबसे अधिक कपास भारत में होती है। हरियाणा, महाराष्ट्र, गुजरात, पञ्जाब, तमिलनाडु आदि राज्यों में कपास का उत्पादन होता है।
- चाय व कॉफी प्रमुख बागानी फसल हैं। हमारे देश में चाय का उत्पादन असम, पश्चिम बङ्गाल, कर्नाटक आदि राज्यों में होता है। कॉफी का सर्वाधिक उत्पादन कर्नाटक में होता है।



## अध्याय-3

### खनिज और शक्ति संसाधन

- भूमि से खनन द्वारा निकाले गये पदार्थों को खनिज कहते हैं। विभिन्न खनिजों की पहचान उनके भौतिक गुणों द्वारा की जाती है, जैसे-उनका रङ्ग, कठोरता, व घनत्व आदि।
- "निधिं बिभ्रती बहुधा गुहा वसु मणिं हिरण्यं पृथिवी ददातु मे। वसूनि नो वसुदा रासमाना देवी दधातु सुमनस्यमाना ॥" (अथर्व. 12.1.44) इस मन्त्र के अनुसार पृथिवी में मणि, सुवर्ण आदि खनिजों का भण्डार भरा है।
- खनिज दो प्रकार के होते हैं- क. धात्विक खनिज ख. अधात्विक खनिज।
- जिस खनिज में धातु मिली हुई हो और उसकी बनावट कठोर हो, उसे धात्विक खनिज कहते हैं। धात्विक खनिज दो प्रकार के होते हैं- लौह धातु और अलौह धातु।
- जिस धात्विक खनिज में लौह पदार्थ जैसे- लौह अयस्क, मैंगनीज, कोबाल्ट, निकल आदि मिला हुआ होता है, लौह धातु कहलाता है।
- जिस खनिज में लोहा नहीं होता है, जैसे- ताँबा, टिन, बाक्सईट, सोना, प्लेटिनम, चाँदी, हीर आदि अलौह धातु कहलाता है।
- वे खनिज जिनमें धातु की मात्रा नहीं होती है, अधात्विक खनिज कहलाते हैं। संगमरमर, ग्रेनाईट, अभ्रक, बलुआ पत्थर, चूना पत्थर आदि अधात्विक खनिज हैं।
- ऐसे संसाधन जिनसे ऊर्जा की प्राप्ति होती है ऊर्जा शक्ति संसाधन कहलाते हैं, जैसे- कोयला, पेट्रोलियम, प्राकृतिक गैस, सौर ऊर्जा आदि। ऊर्जा प्राप्ति के स्रोतों को दो रूपों में विभाजित किया गया है- क. परम्परागत ख. अपरम्परागत
- ऐसे ऊर्जा स्रोत जिनका उपयोग हम प्राचीनकाल से करते आ रहे हैं, परम्परागत ऊर्जा स्रोत कहलाते हैं। परम्परागत ऊर्जा प्राप्ति के दो मुख्य स्रोत- पेड़-पौधों से प्राप्त ईंधन और जीवाश्म ईंधन हैं। ईंधन का उपयोग प्रायः खाना पकाने में किया जाता है।
- आज से लाखों वर्ष पूर्व जानवरों और पौधों के अवशेष भूमि के अन्दर दब गए और कालान्तर में दाब और ताप के कारण जीवाश्म ईंधन में परिवर्तित हो गए हैं।
- लाखों वर्षों पहले प्राकृतिक आपदा के कारण पृथिवी के पेड़-पौधे एवं जीव-जन्तु भूमि के अन्दर दब गये और धीरे-धीरे प्राकृतिक क्रियाओं के परिणाम स्वरूप खनिजों के रूप में परिवर्तित हो गये। कोयला एक जीवाश्म ईंधन है।

- कोयले का उपयोग घरेलू ईंधन, कारखानों और विद्युत उत्पादन आदि में किया जाता है। कोयला को तापीय ऊर्जा भी कहते हैं। भारत में मुख्य कोयला उत्पादक राज्य झारखण्ड, छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश, पश्चिमी बङ्गाल हैं।
- पेट्रोलियम निर्माण भी कोयले की तरह जीव-जन्तुओं और वनस्पति का भूमि के अन्दर दबने तथा कालान्तर में उच्च ताप व दाब के आतपन के कारण हुआ है, इसे शिला रस या कच्चा तेल भी कहते हैं।
- पृथिवी के अन्दर से निकलने वाले काले द्रव्य पदार्थ को प्रभाजी आसवन विधि से शुद्धिकरण द्वारा पेट्रोल, डीजल, केरोसीन, तारकोल, ग्रीस आदि अनेक पदार्थ बनते हैं। पेट्रोलियम शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के पेट्रा और ओलियम शब्दों से हुई है, जिनका अर्थ शैल तेल है।
- पेट्रोलियम का प्रयोग परिवहन साधन को चलाने, ऊर्जा के उत्पादन आदि में किया जाता है। भारत में इसके मुख्य उत्पादक राज्य असम, महाराष्ट्र, गुजरात और राजस्थान आदि हैं।
- प्राकृतिक गैस, पेट्रोलियम पदार्थों के साथ भूमि के अन्दर पाई जाती है। जब आशोधित पेट्रोलियम धरातल पर लाया जाता है तब प्राकृतिक गैस निर्मुक्त होती है।
- प्राकृतिक गैस में अनेक गैसों के मिश्रण के साथ मीथेन गैस की प्रधानता होती है। इसका उपयोग घरेलू एवं औद्योगिक ईंधन के रूप में किया जाता है। भारत में सर्वाधिक प्राकृतिक गैस का उत्पादन त्रिपुरा राज्य में होता है, इसके अतिरिक्त राजस्थान, महाराष्ट्र आदि मुख्य प्राकृतिक गैस उत्पादक राज्य हैं।
- संपीडित प्राकृतिक गैस (CNG) पर्यावरण अनुकूलित गैस है, इसका प्रयोग ऑटोमोबाइल ईंधन के रूप में किया जाता है।
- बहते हुए जल की गति से जो विद्युत उत्पन्न की जाती है, उसे जल विद्युत कहते हैं। विश्व में सर्वप्रथम नार्वे में जल विद्युत उत्पन्न की गई थी। भारत में भाखड़ा नाँगल, गाँधीसागर, नागार्जुन सागर, आदि जल विद्युत के प्रमुख केन्द्र हैं।
- ऊर्जा के ऐसे संसाधन जिनका विकास अभी कुछ दशकों में ही हुआ है, उन्हें ऊर्जा के अपरम्परागत स्रोत कहते हैं। यह ऊर्जा का नवीकरणीय स्रोत है। सौरऊर्जा, पवनऊर्जा, बायोगैस, परमाणु ऊर्जा आदि अपरम्परागत स्रोत हैं।
- सौर ऊर्जा का प्रमुख स्रोत सूर्य का प्रकाश है। सौर ऊर्जा को विद्युत ऊर्जा में रूपान्तरित कर उपभोग किया जाता है। इसका उपयोग सौर कुकर, सोलर ड्रायर, रोशनी आदि के लिए किया जाता है।
- पवन ऊर्जा का निर्माण तेज हवाओं से पवन चक्कियों को चलाने से होता है। पवन ऊर्जा को विद्युत ऊर्जा में रूपान्तरित कर उपयोग में लिया जाता है।
- भारत में पवन ऊर्जा का उपयोग कुओं से पानी निकालने और आटा पीसने आदि के लिए प्राचीन समय से किया जा रहा है। भारत में राजस्थान, तमिलनाडु, आन्ध्रप्रदेश आदि मुख्य पवन ऊर्जा के प्रमुख उत्पादक राज्य हैं। स्कॉटलैंड में विश्व का प्रथम सौर और पवन ऊर्जा चालित बस अड्डा बना था।

- जिस ऊर्जा का निर्माण पशुओं के गोबर, मृतजीव-जन्तुओं के अवशिष्टों आदि को गैसीय ईंधन में परिवर्तित कर उपयोग में लाया जाता है, बायोगैस कहलाता है।
- बायोगैस का उपयोग भोजन पकाने तथा विद्युत उत्पादन आदि के लिये होता है। बायोगैस के अपशिष्ट को सर्वोत्तम जैविक खाद के रूप में प्रयुक्त किया जाता है।
- वह ऊर्जा जिसका निर्माण नियन्त्रित नाभकीय अभिक्रिया में उष्मा उत्सर्जन से किया जाता है, परमाणु ऊर्जा कहलाती है। परमाणु ऊर्जा के प्रमुख स्रोत यूरेनियम और थोरियम हैं, जो रेडियोधर्मी पदार्थ हैं। भारत में परमाणु ऊर्जा के जनक डॉ. होमी जहाँगीर भाभा थे।
- भारत में परमाणु ऊर्जा के प्रमुख केन्द्र नरौरा (उत्तर प्रदेश), रावतभाटा (राजस्थान), तारापुर (महाराष्ट्र) कैगा (कर्नाटक), कलपक्कम (तमिलनाडु) आदि हैं।
- पृथिवी से प्राप्त ताप ऊर्जा को भूतापीय ऊर्जा कहते हैं। यह ऊर्जा हमें भूगर्भ से निकलने वाले गर्म जल स्रोतों से प्राप्त होती है। इसका उपयोग भोजन बनाने, उष्मा प्राप्त करने, आदि में किया जाता है। भारत के हिमाचल प्रदेश में मणिकर और लद्दाख में पूगा घाटी में भूतापीय ऊर्जा संयंत्र स्थापित किए गये हैं।
- ज्वार से उत्पन्न होने वाली ऊर्जा को ज्वारीय ऊर्जा कहते हैं। इस ऊर्जा का उत्पादन समुद्र के सँकरे मुहानों में बाँध बना कर किया जाता है। गुजरात राज्य के कच्छ के रण में ज्वारीय ऊर्जा का उत्पादन किया जाता है। फ्रान्स में विश्व का पहला ज्वारीय ऊर्जा स्टेशन बनाया गया था।
- खनिज को हम पाँच तरीकों से पृथिवी से बाहर निकालते हैं- 1. खनन 2. विवृतखनन 3. कूपकी खनन, 4. प्रवेधन 5. आखनन।
- विश्व में खनिजों का वितरण समान रूप से नहीं है। बॉक्साइट, मैंगनीज, निकल, जस्ता, सोना, चाँदी, और ताँबे आदि का खनन एशिया में अधिक होता है।
- यूरोप में लौह-अयस्क, उत्तरी व दक्षिणी अमेरिका में सोना, चाँदी, जस्ता, निकल, लौह-अयस्क और ताँबा तथा दक्षिणी अफ्रीका में हीरा, सोना, प्लेटिनम, तेल आदि का खनन होता है।
- ऑस्ट्रेलिया में एल्युमिनियम, ताँबा, सीसा, जस्ता, व मैंगनीज पाये जाते हैं। एन्टीमनी, टंगस्टन, व सीसा का उत्पादन सबसे अधिक चीन में होता है।
- खनिज एक अनवीकरणीय प्राकृतिक संसाधन है। खनिजों के निर्माण में हजारों वर्ष लगते हैं। धातुओं का पुनर्चक्रण इनके संरक्षण का प्रमुख उपाय है।

## अध्याय- 4

### उद्योग

- कच्चे माल की सहायता से हमारे लिए उपयोगी वस्तुओं का निर्माण करने वाली इकाई को विनिर्माण या उद्योग कहा जाता है। उद्योगों का सम्बन्ध आर्थिक गतिविधियों- वस्तुओं के उत्पादन, खनिजों के खनन और सेवाओं से सम्बन्धित है।
- वर्तमान में उद्योगों को मुख्यतः तीन क्षेत्रों में विभाजित किया जा सकता है- 1. प्राथमिक विनिर्माण क्षेत्र 2. द्वितीयक विनिर्माण क्षेत्र 3. तृतीयक विनिर्माण क्षेत्र।
- भोजन सङ्ग्रहण, पशुपालन, मत्स्यपालन, कृषि, खनन आदि प्राथमिक विनिर्माण क्षेत्र हैं।
- कच्चे माल को मूल्यवान उत्पादों में परिवर्तित किया जाना जैसे- गन्ने से शक्कर बनाना, कपास से कपड़ा बनाना, लोहे से उपकरण बनाना आदि द्वितीयक विनिर्माण क्षेत्र हैं।
- सञ्चार, पर्यटन व व्यापार, सूचना, शिक्षा, स्वास्थ्य आदि तृतीयक विनिर्माण क्षेत्र कहलाते हैं।
- आकार के आधार पर उद्योग तीन प्रकार के होते हैं- 1. कुटीर उद्योग 2. लघु उद्योग 3. वृहद् उद्योग।
- ऐसे उद्योग जिनका सञ्चालन घर के लोगों की मदद से छोटे स्तर पर किया जाता है, उन्हें कुटीर या गृह उद्योग कहते हैं, जैसे- मिट्टी के पात्र बनाना, झाड़ू बनाना, स्वेटर की बुनाई, रस्सी निर्माण, इत्यादि।
- ऐसे उद्योग जिनके सञ्चालन में कम पूँजी, छोटी मशीनें और कम मजदूरों की आवश्यकता होती है, लघु उद्योग कहते हैं, जैसे- ईट निर्माण उद्योग व माचिस का कारखाना इत्यादि।
- ऐसे उद्योग जिनके सञ्चालन में अधिक पूँजी, बड़ी- बड़ी मशीनें और अधिक मजदूरों की आवश्यकता होती है, वृहद् उद्योग कहलाता है, जैसे- सीमेन्ट निर्माण उद्योग, लोहा-इस्पात उद्योग, सूती वस्त्र निर्माण उद्योग इत्यादि।
- स्वामित्व के आधार पर उद्योगों के चार प्रकार हैं- 1. निजी उद्योग 2. सार्वजनिक उद्योग 3. संयुक्त उद्योग 4. सहकारी उद्योग।
- जिस उद्योग का सञ्चालन और स्वामित्व एक व्यक्ति या व्यक्तियों के समूह द्वारा किया जाता है, उसे निजी या व्यक्तिगत उद्योग कहा जाता है। जैसे- टाटा, बिरला, रिलायन्स समूह आदि निजी उद्योग हैं।
- जो उद्योग सरकार द्वारा सञ्चालित किये जाते हैं, उन्हें सार्वजनिक उद्योग कहा जाता है, जैसे- हिन्दुस्तान एरोनॉटिक्स लिमिटेड, हिन्दुस्तान कॉपर लि., स्टील ऑथोरिटी ऑफ इंडिया आदि।
- वे व्यवसाय या उद्योग जिनमें दो या दो से अधिक इकाईयाँ पूँजी का निवेश कर व्यवसाय के सञ्चालन में सहभाग करती हैं, संयुक्त उद्योग कहलाते हैं।
- ऐसे उद्योग जिनका सञ्चालन व स्वामित्व कच्चे माल के उत्पादकों या पूर्तिकारों, कामगारों अथवा दोनों का होता है, सहकारी क्षेत्र के उद्योग कहलाते हैं। जैसे- सहकारी समूह, डेयरी उद्योग आदि।

- कच्चे माल पर आधारित उद्योगों को चार भागों में बाँटा गया है- 1. कृषि आधारित 2. समुद्र आधारित 3. खनिज आधारित 4. वन आधारित।
- ऐसे उद्योग, जो कच्चे माल के रूप में वनस्पति और जीव-जंतुओं पर आधारित हों, कृषि आधारित उद्योग कहलाते हैं, जैसे- खाद्य संसाधन, वनस्पति तेल, सूती वस्त्र, डेयरी उत्पाद आदि।
- जिन उद्योगों में खनिज अयस्कों का उपयोग कच्चे माल के रूप में किया जाता है, उन्हें खनिज आधारित उद्योग कहते हैं। इसके अन्तर्गत भारी उद्योग आते हैं।
- वे उद्योग जो सागरों एवं महासागरों से प्राप्त कच्चे माल पर आधारित हैं, समुद्र आधारित उद्योग कहालाते हैं, जैसे- समुद्री खाद्य प्रसंस्करण उद्योग और मत्स्य तेल निर्माण उद्योग आदि।
- ऐसे उद्योग जिनमें वनों से प्राप्त उत्पादों का प्रयोग कच्चे माल के रूप में किया जाता है, वन आधारित उद्योग कहलाते हैं। जैसे- बाँस का सामान, फर्नीचर, झाड़ू, बीड़ी, माचिस उद्योग, लुगदी व कागज उद्योग, वनौषधि, कत्था, गोंद आदि।
- औद्योगिक तन्त्र के तीन भाग होते हैं- 1. निवेश 2. प्रक्रम 3. निर्गत।
- भूमि की आवश्यकता, परिश्रम, धन व कच्चा माल, निवेश से संबंधित हैं। जैसे- सूती वस्त्र निर्माण उद्योग में कपास, मजदूरी, गोदाम एवं परिवहन इत्यादि में धन का निवेश करना होता है।
- कच्चे माल का परिष्करण करके उसके मूल रूप में परिवर्तन करना प्रक्रम कहलाता है, जैसे- वस्त्र की ओटाई, कटाई, बुनाई और रंगाई-छपाई इत्यादि को प्रक्रम कहा जाता है।
- निर्गत में वस्तु को निर्मित करके विक्रय के लिए तैयार कर दिया जाता है, जैसे शर्ट- पैट, इत्यादि।
- उद्योगों में तकनीकी विफलता या संकट उत्पन्न करने वाले पदार्थों के उपयोग के कारण औद्योगिक विपदा/ दुर्घटना घटित होती है।
- 3 दिसम्बर, 1984 को भोपाल के यूनियन कार्बाइड कारखाने में विषैली गैस मिथाइल आयसोसायनेट (MIC) के रिसाव के कारण 35,598 व्यक्तियों की मृत्यु हो गई थी। यह भारत की अब तक की सबसे बड़ी औद्योगिक दुर्घटना है।
- भारत सरकार ने लौह उद्योग के उचित प्रबंधन के लिए स्टील अथारिटी ऑफ इंडिया (SAIL) की स्थापना 1973 ई. में की थी।
- संयुक्त राज्य अमेरीका के कैलिफोर्निया राज्य का दक्षिण भाग सिलिकॉन घाटी के नाम से प्रसिद्ध है। बैंगलुरु को भारत की सिलिकॉन वैली कहा जाता है।



### अध्याय- 5

#### भारत में अंग्रेजी शासन की स्थापना

- 1455 ई. में कुस्तुन्तुनिया पर उस्मानी साम्राज्य का अधिकार हो गया था परिणामस्वरूप पश्चिमी देशों का पूर्वी देशों के साथ व्यापारिक स्थलीय मार्ग अवरुद्ध हो गया था।
- 1498 ई. में पुर्तगाली यात्री वास्को-डी-गामा भारत के कालीकट बन्दरगाह पर आया था। इसके पश्चात यूरोपीय व्यापारियों के लिए भारत से व्यापार का नया मार्ग मिल गया था।
- यूरोपीय व्यापारियों में पुर्तगाली, डच, फ्रान्सिसी एवं अंग्रेज मुख्य थे। भारत में यूरोपीयन लोगों का एजेण्डा त्रिमुखी- धार्मिक (क्रिश्चनिटी का प्रचार), राजनीतिक (कॉलोनियलिज्म) तथा आर्थिक (कैपिटलिज्म) था।
- अंग्रेजों ने भारत में शासन स्थापित करने के लिए मन्त्र विप्लव का सहारा लिया था। इसमें व्यक्ति के मन में विभ्रान्ति और विकृति आ जाती है। वह अपना स्वत्त्व भूल जाता है और शून्य की अवस्था प्राप्त कर, दूसरों के हाथ की कठपुतली बन जाता है।
- मन्त्र विप्लव का महाभारत में भी उल्लेख है- "एक विषरसो हन्ति, शस्त्रेणै वध्यते, सराष्ट्रं सप्रजं हन्ति राजान मन्त्रविप्लवः।" (उद्योग पर्व 33-45) अर्थात् विष केवल लेने वाले को मारता है, बाण से केवल लगने वाले की मृत्यु होती है परन्तु मन्त्र विप्लव से राष्ट्र, समाज एवं प्रजा सबकी मृत्यु होती है। महात्मा विदुर ने इसे ही मन्त्र विप्लव कहा है।
- ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनी एक निजी कम्पनी थी। यह कम्पनी 1600 ई. में ब्रिटिश महारानी एलिजाबेथ प्रथम से पारपत्र (अधिकारपत्र) लेकर भारत में व्यापार करने के लिए आई थी।
- मुगल बादशाह जहाँगीर ने 1608 ई. में कम्पनी को व्यापार की आज्ञा प्रदान कर दी थी। कम्पनी ने सूरत में अपना प्रथम व्यापारिक केन्द्र (कोठी) बनाया था।
- इन कम्पनियों में आपसी प्रतिस्पर्धा के कारण व्यापार पर एकाधिकार प्राप्त करने के लिए आपस में युद्ध हुए थे। इन युद्धों में अंग्रेज एवं डचों ने मिलकर पुर्तगालियों को 1612 ई. में परास्त कर दिया था।
- ब्रिटिश कम्पनी ने 1613 ई. में एक शाही फरमान के द्वारा भारत में अपना व्यापार सुरक्षित कर लिया था। इसी समय पुर्तगाल की राजकुमारी का विवाह ब्रिटिश राजकुमार चार्ल्स द्वितीय से हुआ था।
- 1661 ई. में पुर्तगाल की राजकुमारी का विवाह ब्रिटिश राजकुमार चार्ल्स द्वितीय से हुआ था। पुर्तगालियों ने बम्बई द्वीप समूह दहेज में ब्रिटेन को दे दिया था।

- ब्रिटेन की महारानी ने इसे 1668 ईस्वी में 10 पाउण्ड बार्शिक पट्टे के किराये पर ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनी को दे दिया था। अब कम्पनी का व्यापारिक मुख्यालय सूरत से मुम्बई स्थानांतरित हो गया था।
- अंग्रेजों ने 1651 ई. में, हुगली नदी के समीप बङ्गाल में अपनी प्रथम फैक्ट्री का निर्माण किया था। धीरे-धीरे कम्पनी के व्यापार में वृद्धि हुई।
- 1690 ई. में अंग्रेज अफसर 'जाँब चारनॉक' ने मुगल अफसरों को रिश्वत देकर, तीन गाँव- सुतानती, कालीकाता और गोविन्दपुर की जमींदारी खरीद ली थी और इन तीन गाँवों को मिलाकर कोलकाता नगर बसाया था।
- ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनी ने अधिकतम लाभ प्राप्त करने के लिए मुगल शासक फरूखसियर से 1717 ई. में निःशुल्क व्यापार का आदेश (फरमान) प्राप्त कर लिया था। इस आदेश का कम्पनी के अधिकारी और कर्मचारी दुरुपयोग करने लगे थे। परिणामतः बङ्गाल में राजस्व वसूली कम हो गई थी।
- 1756 ई. में नवाब अलीवर्दी खाँ की मृत्यु के बाद सिराजुद्दौला बङ्गाल का नवाब बना था। सिराजुद्दौला ने ईस्ट इंडिया कम्पनी को आदेश दिया की वह राजस्व शुल्क का भुगतान करे एवं नवाब के कार्यों में बाधा न डालें।
- ईस्ट इंडिया कम्पनी ने राबर्ट क्लाइव को बंगाल का प्रथम गवर्नर जनरल 1757 ई. में नियुक्त किया था।
- 23 जून 1757 में प्लासी का युद्ध शुरू हुआ। अंग्रेजों ने नवाब के वफादार मीर जाफर को नवाब के पद का प्रलोभन देकर अपने साथ मिला लिया था। अन्त में ईस्ट इंडिया कम्पनी ने राबर्ट क्लाइव के नेतृत्व में अंग्रेजों ने प्लासी का युद्ध जीत कर बङ्गाल में अपनी श्रेष्ठता स्थापित कर ली थी।
- मीर कासिम ने अवध के नवाब व मुगल बादशाह की संयुक्त सेनाओं एवं अंग्रेजों के मध्य 23 अक्टूबर, 1764 ई. को बक्सर नामक स्थान पर युद्ध हुआ था। इस युद्ध में अंग्रेजों को विजय मिली और बङ्गाल पर उनका पूर्ण शासन स्थापित हो गया था।
- लार्ड वेलजली 1798 ई. में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनी का गवर्नर जनरल बनकर भारत आया था।
- लार्ड वेलजली की सहायक सन्धि के अन्तर्गत भारतीय राजाओं को सुरक्षा प्रदान करने के लिए, उनके यहाँ पर अंग्रेजी सेना को रखा जाता था। उस सेना का सारा व्यय, उस राजा को देना होता था। यदि वह राजा ऐसा नहीं करता था, तो उस पर बहुत अधिक अर्थदण्ड लगाया जाता था। अर्थदण्ड नहीं चुकाने की स्थिति में, उसके राज्य को कम्पनी के राज्य में मिला दिया जाता था।
- सहायक सन्धि के द्वारा भारतीय रियासतों में ब्रिटिश रेजीडेन्ट की नियुक्ति की गई, जो रियासतों की गतिविधियों पर दृष्टि रखने के साथ ही साथ उनके कार्यों में भी हस्तक्षेप करता था।
- मैसूर के शासक हैदरअली का पुत्र टीपू 22 दिसम्बर, 1782 ई. में मैसूर का सुल्तान बना था।

- 1790-92 ई. में 'आंग्ल-मैसूर युद्ध' हुआ, जिसमें टीपू सुल्तान की पराजय हुई और अंग्रेजों ने मंगलोर पर अधिकार कर लिया था। 1799 ई. में अंग्रेज, मराठों व निजाम की संयुक्त सेना से हुए युद्ध में टीपू सुल्तान मारा गया था।
- मराठों की पानीपत के तृतीय युद्ध (1761 ई.) में पराजय के पश्चात पेशवा के कमजोर होने के कारण, मराठा शक्ति का चार भागों- सिन्धिया (ग्वालियर), होलकर (इन्दौर), गायकवाड़ (बडौदा) और भोंसले (नागपुर) में विभाजन हो गया था।
- मराठों के प्रभाव को कम करने के लिए 1775 ई-1818 ई. तक अंग्रेजों-मराठों के मध्य तीन युद्ध हुए थे। अन्ततः मराठा शक्ति का पराभव हुआ।
- 1830 के दशक में वैश्विक स्तर पर रूस के बढ़ते प्रभाव को रोकने के लिए कम्पनी को 1838 ई.- 1842 ई. तक भारत की उत्तरी-पश्चिमी सीमा (अफगानिस्तान) पर कम्पनी का अप्रत्यक्ष रूप से वहाँ नियन्त्रण तो हो गया था।
- पञ्जाब में कम्पनी को महाराजा रणजीत सिंह (1780 से 1839 ई. तक) के विरुद्ध पराजय का सामना करना पड़ा था। महाराजा रणजीत सिंह की मृत्यु के पश्चात 1849 ई. में पञ्जाब का कम्पनी ने अधिग्रहण कर लिया था।
- 1848 ई. में लार्ड डलहौजी भारत का गवर्नर जनरल बना। उसने भारत में अंग्रेजी साम्राज्य के विस्तार की नई योजना बनाई थी जिसे 'राज्य हडप या विलय नीति' कहा जाता है।
- राज्य हडप नीति के द्वारा डलहौजी ने सतारा, संबलपुर, उदयपुर, नागपुर एवं झांसी का अधिग्रहण कर, कम्पनी राज्य में विलय कर दिया था, जिससे सम्पूर्ण भारतीय जनमानस में व्यापक असंतोष व्याप्त हुआ था। परिणामतः 1857 ई. का प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम हुआ था।
- गवर्नर जनरल वॉरेन हेस्टिंग्स (1773 ई.-1785 ई.) ने सरकारी ब्रिटिश क्षेत्रों को तीन प्रशासनिक भागों में विभाजित कर, उन्हें बङ्गाल, मुम्बई व मद्रास प्रेसिडेन्सी नाम दिया था।
- गवर्नर जनरल वॉरेन हेस्टिंग्स ने 1772 ई. में भारत के प्रत्येक शहर में दो प्रकार के न्यायालय- 1. फौजदारी न्यायालय 2. दीवानी न्यायालय स्थापित किए थे।
- इलाहाबाद की संधि के अन्तर्गत 12 अगस्त, 1765 ई. को मुगल बादशाह शाह आलम द्वितीय ने बङ्गाल की दीवानी, ईस्ट इंडिया कम्पनी को प्रदान की थी।
- 1793 ई. में तत्कालीन गवर्नर जनरल लार्ड कार्नवालिस द्वारा बङ्गाल में स्थायी बन्दोबस्त (नई राजस्व नीति) को लागू किया गया था। यह बङ्गाल के जमींदारों और ईस्ट इंडिया कम्पनी के मध्य कर सङ्ग्रहण का स्थायी समझौता था। इसे इस्तमरारी बंदोबस्त भी कहा जाता है।



- बङ्गाल की भाँति मध्य प्रान्त में लार्ड हेस्टिंग्स ने नई भू-राजस्व व्यवस्था लागू की, जिसे महालवाडी व्यवस्था कहते हैं। महालवाडी व्यवस्था का प्रस्ताव 1819 ई. में हाल्ट मैकेंजी द्वारा लाया गया था। 1822 ई. में रेग्युलेशन एक्ट-7 द्वारा इसे कानूनी स्वरूप प्रदान कर लागू किया गया था।
- रैयतवाडी बन्दोबस्त व्यवस्था सर्वप्रथम ब्रिटिश शासन ने 1802 ई. में दक्षिण भारत में लागू की थी। इस व्यवस्था को थॉमस मुनरो ने विकसित किया था। अतः इसे मुनरो व्यवस्था भी कहा जाता है। तत्कालीन भारत के 51 प्रतिशत भाग पर यह व्यवस्था लागू थी।
- ईस्ट इंडिया कम्पनी के अधिकारियों ने कम्पनी की आय बढ़ाने और अपनी आवश्यकता की दृष्टि से भारत के विभिन्न भागों जैसे- बङ्गाल-बिहार में पटसन, नील और अफीम, उत्तरप्रदेश में गन्ना, महाराष्ट्र में कपास आदि की खेती करने के लिये कृषकों पर दबाव बनाया था।
- भारतीय नील की उच्च गुणवत्ता के कारण यूरोपीय बाजारों में अधिक मांग थी। 1810 ई. में ब्रिटेन द्वारा आयात किये गये नील में 95 प्रतिशत भारतीयों का हिस्सा था।
- रैयती व्यवस्था के अन्तर्गत ईस्ट इंडिया कम्पनी द्वारा किसानों को पट्टा देकर नील की खेती करवाई जाती थी। रैयत को कुल भूमि के कम से कम 25% भूमि पर नील की खेती करनी होती थी। निरन्तर नील की खेती करने से खेत अनुपजाऊ हो जाते थे।
- मार्च 1859 ई. में किसानों ने नील की खेती करने और बागान मालिकों को राजस्व चुकाने से मना भी कर दिया था। इसलिए वे अब आमने-सामने की लड़ाई लड़ने के लिए तैयार हो गये थे। 1857 की क्रान्ति के पश्चात यह सबसे बड़ा आन्दोलन था।

यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्



## अध्याय- 6

### 1857 की क्रान्ति

- ब्रिटिश शासन के नियम एवं कानून हमारे समाज के अनुकूल नहीं थे। इन नीतियों एवं कार्यवाहियों ने भारत की पारम्परिक शासन व्यवस्था एवं जन-जीवन शैली को व्यापक स्तर पर प्रभावित किया था।
- व्यापक परिवर्तनों से तत्कालीन भारतीय जन-मानस उद्देलित हो उठा था। परिणामतः 100 वर्षों के अनन्तर विदेशी के शासन विरुद्ध 1857 ई. में देशव्यापी क्रान्ति हुई। इसे भारत के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम के नाम से जाना जाता है।
- 1857 ई. की क्रान्ति किसी एक घटना का परिणाम नहीं थी, अपितु विगत सौ वर्षों में अंग्रेजी शासन की गलत नीतियों, कानूनों एवं शोषणकारी प्रवृत्तियों का परिणाम थी।
- लार्ड क्लाइव ने अपनी कूटनीति से ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनी को आर्थिक संस्था से राजनीतिक संस्था बना दिया था।
- कम्पनी ने भारत के देशी राजाओं के राज्यों को गोद- निषेध, सहायक संधि, जैसी कूटनीतिपरक राज्य हड़प नीतियों से अंग्रेजी साम्राज्य में मिला लिया और उनकी विविध प्रकार की सहायता को बन्द कर दिया था। इसलिए देशी राजा-महाराजाओं के साथ जनमानस भी अंग्रेजों के विरुद्ध हो गया था।
- ईसाई मिशनरियों को भारत में उनके धर्म के प्रचार-प्रसार की छूट प्रदान की गई थी। वे भारतीयों की धार्मिक एवं सामाजिक परम्पराओं को हेय बताते हुए, धर्म परिवर्तन कराते थे।
- समाज सुधार के नाम पर अंग्रेजों ने भारतीय लोगों के सामाजिक जीवन में हस्तक्षेप किया था, जिससे भारतीयों के मन में अंग्रेजों के विरुद्ध पनपी घृणा ने विप्लव का रूप धारण कर लिया था।
- अंग्रेजों ने सत्ता प्राप्ति के बाद इसका बेरहमी से शोषण किया था। यहाँ के प्राचीन एवं पारम्परिक उद्योग-धन्धे नष्ट कर दिये गये थे। भारत से सस्ता कच्चा माल खरीद कर ब्रिटेन में, उसे मशीनों द्वारा तैयार करके वापिस मँहगे दामों में यहाँ बेचा जाता था। किसानों, कारीगरों से जबरन लगान वसूला जाता था।
- ब्रिटिश सरकार ने खाने-पीने की वस्तुओं पर अत्यधिक कर लगा दिया था, जिससे यहाँ पर भुखमरी की स्थिति पैदा हो गई थी। अतः भारतीय सामान्य जनमानस, अंग्रेजों के विरुद्ध हो गये थे।
- अंग्रेज, भारतीय सैनिकों को कम वेतन देते थे, साथ ही उनके धार्मिक और सामाजिक जीवन में हस्तक्षेप करते थे। उस समय कारतूसों के ऊपर लगे सुरक्षा कवच गाय व सूअर की चर्बी से बनते थे, जिन्हें सैनिकों को मुँह से खोलना पड़ता था। इससे भारतीय सैनिकों की धार्मिक एवं सैन्य भावना को ठेस पहुँची और उन्होंने इसका विरोध करना शुरू कर दिया था।

- 29 मार्च 1857 ई. को सैनिक मंगल पाण्डे ने बैरकपुर छावनी में इन कारतूसों का प्रयोग करने से मना कर दिया और अंग्रेज सैन्य अफसर को गोली मार दी थी और साथ ही सैन्य विद्रोह भड़क गया था।
- मंगल पाण्डे को 8 अप्रैल 1857 को फाँसी दे दी गई। शीघ्र ही विप्लव की यह चिंगारी, जो मेरठ की बैरकपुर छावनी से उठी अवध, मेरठ, झाँसी, ग्वालियर, कानपुर, राजस्थान आदि क्षेत्रों से होते हुए सम्पूर्ण देश में फैल गई।
- 1857 ई. के क्रान्ति की योजना पेशवा नाना साहेब व उनके सहयोगी अजीमुल्ला और रंगोजी बापू ने मुख्य रूप से तैयार की थी। इस क्रान्ति का प्रतीक चिह्न कमल का फूल व रोटी था।
- प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम मुगल बादशाह बहादुरशाह जफर के नेतृत्व में 31 मई 1857 से शुरू किया जाना था। लेकिन मेरठ छावनी में विद्रोह होने से यह क्रान्ति 29 मार्च को ही शुरू हो गई तथा शीघ्र ही सम्पूर्ण उत्तर भारत में फैल गई थी।
- 11 मई, 1857 ई. को क्रान्तिकारियों ने दिल्ली पर अधिकार कर, बहादुरशाह जफर को सम्राट घोषित कर दिया था। उस समय भारत का गवर्नर जनरल लार्ड केनिंग था।
- कानपुर में नाना साहेब, तात्या टोपे, झाँसी में रानी लक्ष्मीबाई, बिहार में कुँवरसिंह, असम में दीवान मणिराम, अवध में बेगम हजरत महल एवं अनेक रजवाड़ों ने क्रान्ति की इस योजना में भाग लेकर अपने-अपने क्षेत्रों से अंग्रेजों को खदेड़ कर अपनी स्वायत्तता की घोषणा कर दी थी।
- गवर्नर जनरल लार्ड केनिंग ने मद्रास, बम्बई, बर्मा और श्रीलंका से अंग्रेजी सेनाओं को बुलाकर विद्रोह को कुचल दिया और भारत में पुनः कम्पनी राज की स्थापना की थी।
- झाँसी की रानी लक्ष्मी बाई शहादत को प्राप्त हुई, बहादुर शाह जफर को कैद करके रंगून निर्वासित कर दिया गया था। धीरे-धीरे स्वतन्त्रता की चिंगारी धीमी पड़ गई थी।
- 1857 ई. की क्रान्ति को विनायक दामोदर सावरकर सरीखे भारतीय चिन्तकों ने भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम कहा था। पाश्चात्यवादी इतिहासकार इसे एक सैनिक विद्रोह मानते हैं।
- अंग्रेजों ने 1859 ई. के अन्त तक इस विप्लव को पूर्ण रूप से नियन्त्रित कर लिया था। परन्तु अंग्रेजों को अपनी शासन की नीतियों में परिवर्तन करना पड़ा था।
- महारानी विक्टोरिया ने 1858 ई. के अपने घोषणा पत्र में देशी राजाओं के अस्तित्व को स्वीकार कर लिया और भारत पर शासन में सलाह के लिए इंडिया काउंसिल बनाई गई थी। भारत में गवर्नर जनरल के स्थान पर वायसराय का पद सृजित किया गया, जो ब्रिटिश सरकार के प्रति सीधे उत्तरदायी था।
- गोद-निषेध नीति को निरस्त कर दिया गया था। भारतीय शासकों को ब्रिटिश शासन के अधीन शासन करने छूट दे दी गई थी। अंग्रेजों ने सेना में व्यापक सुधार किए गये थे।

- 1857 ई. की क्रान्ति के परिणामस्वरूप अंग्रेजी शासन में भारतीय लोगों को भी आंशिक भागीदारी प्राप्त हुई थी। भारतीयों के अधिकारों की रक्षा के उद्देश्य से भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना 1885 ई. में ए.ओ.ह्यूम तथा कुछ भारतियों के नेतृत्व में मुम्बई के गोकुलदास तेजपाल भवन में की गई, जो आगे चलकर स्वतन्त्रता प्राप्ति का आधार बनी थी।
- नाना साहेब (1824-1859) के बचपन का नाम धोंडुपंत था। ये पेशवा बाजीराव द्वितीय के उत्तराधिकारी थे। ये सन 1857 की क्रान्ति के प्रमुख शिल्पकार थे तथा इस महा संग्राम में कानपुर में अंग्रेजों के विरुद्ध क्रान्तिकारियों का नेतृत्व किया था।
- बहादुर शाह जफर (1775-1862) मुगल साम्राज्य के अंतिम बादशाह थे। 1857 ई. का स्वतन्त्रता संग्राम इन्हीं के नेतृत्व में लड़ा गया था। इस स्वतन्त्रता संग्राम के असफल होने के बाद इन्हें अंग्रेजी सरकार द्वारा रंगून निर्वासित कर दिया गया था।
- तात्या टोपे (1814-1859) भारत के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम में मुख्य रूप से भाग लेने वाले स्वतन्त्रता सेनानी थे। इनका वास्तविक नाम रामचंद्र पांडुरङ्ग येवलकर था, लेकिन सब इनको प्यार से तात्या कहते थे। इनका जन्म एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। ये नाना साहेब के सैन्य सलाहकार थे।
- रानी लक्ष्मी बाई (1828-1858) के बचपन का नाम मनु था। इनका जन्म वाराणसी में हुआ था। इनका विवाह झाँसी के राजा गंगाधर राव के साथ हुआ था।
- प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम के महानायक वीर कुँवर सिंह (1777-1858) बिहार के जगदीशपुर तालुका के जमींदार थे। इन्होंने 80 वर्ष की आयु में अंग्रेजों के विरुद्ध युद्ध लड़ा और वीरगति को प्राप्त हुए थे।
- प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम के पूर्व 1817 ई.-1825 ई. के मध्य ओडिशा राज्य के खुर्दा में अंग्रेजी शासन के विरुद्ध बक्सी जगबन्धु के नेतृत्व में एक सशस्त्र आन्दोलन हुआ था, जिसे इतिहास में पाइक विद्रोह के नाम जाना जाता है।

## अध्याय-7

### औपनिवेशिक भारत में शिक्षा

- अंग्रेजों की साम्राज्यवादी नीति तथा निज धर्म एवं संस्कृति की श्रेष्ठता की अहमन्यता ने उन्हें अपने साम्राज्य में पाश्चात्य संस्कृति के विस्तार के लिए प्रेरित किया था। इसके लिए उन्होंने सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं बौद्धिक हथकंडे अपनाए थे।
- विश्व की प्राचीनतम सभ्यता एवं संस्कृति के रूप में प्रसिद्ध भारत और वहाँ के लोगों को यूरोपीय पुनर्जागरण से विकसित हुए मशीनीकरण, नूतन विज्ञान, सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक उन्नति को श्रेष्ठता के रूप में प्रदर्शित करते हुए आकर्षित किया था।
- 1783 ईस्वी में ईस्ट इंडिया कम्पनी द्वारा सर विलियम जॉन्स को उच्च न्यायालय का न्यायाधीश नियुक्त किया गया था। वह भारतीय संस्कृति से अत्यधिक प्रभावित था।
- भारत में सर विलियम जॉन्स अरबी, फारसी एवं संस्कृत भाषाएँ सीखकर, भारतीय दर्शन, धर्मशास्त्र, अंकगणित और चिकित्सा विज्ञान इत्यादि प्राचीन भारतीय ग्रन्थों का अध्ययन किया था। विलियम जोन्स ने 1784 ई. में एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बङ्गाल की स्थापना की थी।
- सर विलियम जॉन्स ने 1781 ई. में कोलकाता में मदरसा तथा 1791 ई. में बनारस में हिन्दू महाविद्यालय की स्थापना की थी। इनकी स्थापना का उद्देश्य भारत की शासन प्रणाली के उचित सञ्चालन के लिए लोगों को संस्कृत ग्रन्थों का ज्ञान कराना था।
- भारत में अंग्रेजी भाषा और आधुनिक शिक्षा प्रणाली के जनक के रूप में लार्ड मैकाले को जाना जाता है। उसने भारतीय विद्यालयों में अंग्रेजी भाषा सिखाने पर बल देने की बात एक पत्र में लिखी थी। उसके इस पत्र को मैकाले का स्मृति पत्र-1835 के नाम से जाना जाता है।
- भारतीय भाषा और संस्कृति का ज्ञान रखने वाले लोगों को प्राच्यवादी कहा जाता है।
- वर्नाकुलर शब्द का प्रयोग औपनिवेशिक भारत में स्थानीय भाषा और शासकीय भाषा के मध्य अन्तर को चिह्नित करने के लिए अंग्रेजों द्वारा किया जाता था।
- 1854 ई. में लंदन के कोर्ट आफ डायरेक्टर ने भारतीय शिक्षा के सन्दर्भ में भारत के गवर्नर जनरल को एक पत्र भेजा, जो कम्पनी के नियन्त्रक मण्डल के अध्यक्ष चार्ल्स वुड के नाम से जारी किया गया था। इसे ही वुड का डिस्पैच (नीति पत्र) कहा जाता है।
- चार्ल्स वुड के डिस्पैच (नीति पत्र) को आधुनिक भारतीय शिक्षा का मैग्नाकार्टा कहा जाता है।
- 1857 ई. में कलकत्ता, बम्बई और मद्रास में विश्वविद्यालयों की स्थापना की गई थी।

- भारत की शिक्षा परम्परा प्राचीनकाल से ही अनुशासन परक, आध्यात्मिक, संस्कारी, तार्किक, प्रायोगिक, वैज्ञानिक एवं कण्ठस्थीकरण पर बल देने वाली थी। इस शिक्षा का उद्देश्य शिक्षार्थी में व्यक्तित्व विकास, स्वावलम्बन तथा चारित्रिक उन्नति का विकास करना था।
- वैदिक वाङ्मय में शिक्षा के महत्त्व को प्रतिपादित किया गया है कि- "मा नो मेधां मा नो दीक्षां मा नो हिंसिष्टं यत्तपः।" (अथर्व. 19.40.3) अर्थात् 'हमारी बुद्धि (ज्ञान) हमारी दीक्षा एवं हमारे तप-कर्म को कोई भी हानि नहीं पहुंचा सके।'
- 1830 के दशक में भारत आए ईसाई धर्म प्रचारक विलियम एडम ने बङ्गाल और बिहार में तत्कालीन भारतीय शिक्षा व्यवस्था पर एक रिपोर्ट तैयार में उल्लेख है कि उस समय भारत में एक लाख से ज्यादा पाठशालाएँ/गुरुकुल थे। प्रत्येक पाठशाला में अधिकांशतः 20 छात्र होते थे। इनमें निःशुल्क, लचीली एवं मौखिक शिक्षा प्रदान की जाती थी।
- ब्रिटेन में शिक्षा संस्थाओं के आरम्भिक दौर में प्रथम स्कूल जब 1811 ई. में खुला तो उस समय भारत में 7,32,000 गुरुकुल थे, जिनमें निःशुल्क एवं जनसुलभ शिक्षा प्रदान की जाती थी। अतः स्पष्ट है कि भारत में ज्ञान का प्रकाश प्राचीन काल से ही जन-जन तक फैलाने का उद्यम किया जाता रहा है।
- महात्मा गाँधी का मानना था कि अंग्रेजों ने अंग्रेजी शिक्षा, जीवनपद्धति एवं संस्कृति का ज्ञान देकर भारतीय संस्कृति व सभ्यता को क्षति पहुँचाने के साथ-साथ यहां के लोगों में जहर घोला है तथा इस शिक्षा ने हमें गुलाम बना दिया है।
- महात्मा गाँधी भारत में 6 से 14 वर्ष तक के बालकों को निःशुल्क, व्यवहारिक, अनुशासन और रोजगार परक शिक्षा के पक्षधर थे। शिक्षक के सन्दर्भ में उनकी सोच आदर्शवादी थी। उनका मानना था कि भारतीय प्राचीन शिक्षा पद्धति सर्वोत्तम है।
- रवीन्द्रनाथ टैगोर ने कहा कि शिक्षा का उद्देश्य बालक की जन्मजात शक्तियों का विकास कर उसके व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना है। शिक्षा के प्रति लोगों की सोच में परिवर्तन लाने के लिए सन् 1901 में कलकत्ता में शांति निकेतन नामक एक शिक्षालय की स्थापना की गई थी।
- स्वामी विवेकानन्द एक महान शिक्षाविद् एवं आध्यात्मिक विचारक थे। उनका बचपन से ही आध्यात्म की ओर झुकाव था। उन्होंने 1881 ई. में स्वामी रामकृष्ण परमहंस से दीक्षा प्राप्त की थी।
- राजा अजीत सिंह के सहयोग से उन्हें 1892 ई. में अमरीका के शिकागो में आयोजित विश्व धर्म सम्मेलन में भाग लेने का अवसर प्राप्त हुआ था। स्वामी विवेकानन्द ने शिकागो के अपने भाषण में सनातन हिन्दू धर्म की श्रेष्ठता स्थापित की थी। इससे उनकी ख्याति सम्पूर्ण विश्व में फैल गई थी। उन्होंने 1 मई, 1897 ई. को बेल्लूरु में रामकृष्ण मिशन की स्थापना की थी।

## अध्याय- 8

### औपनिवेशिक भारत में उद्योग एवं नगरीकरण

- वैदिक संस्कृति में कृषि उन्नत अवस्था में थी। इसलिए उस समय कृषि आधारित उद्योगों का अधिक विकास हुआ था। वैदिक वाङ्मय में विविध उद्योगों के उल्लेख प्राप्त होते हैं। वेदों में लगभग 140 प्रकार के उद्योगों का उल्लेख मिलता है। वेदों में शिल्पियों (उद्यमियों) को ऋभु कहा गया है।
- कारुरहं ततो भिष गुपलप्रक्षणी नना। नानाधियो वसूयवो ऽनु गा इव तस्थिमे॥ (ऋग्वेद 9.112.3) अर्थात् मैं कारु (कवि, शिल्पी) हूँ, मेरे पिता भिषज (वैद्य) हैं और मेरी माँ चक्की चलाने का कार्य करती है। इससे स्पष्ट है कि एक ही परिवार के लोग विविध प्रकार के उद्योगों में लगे रहते थे।
- 18वीं शताब्दी की इंग्लैंड की औद्योगिक क्रान्ति का भारत में औद्योगिक क्रान्ति का सर्वाधिक प्रभाव वस्त्र उद्योग एवं लौह-इस्पात उद्योग पर पड़ा था।
- भारत में अंग्रेजी शासन की अधिक लाभ प्राप्त करने की चाहत ने भारत की उन्नत परम्परागत उद्योग प्रणाली को नष्ट कर यूरोपीयन मशीनीकृत उद्योगों को भारत में स्थापित करने लगे थे।
- वस्त्र निर्माण के सन्दर्भ में ऋग्वेद में उल्लेख है- पुमाँ एनं तनुत उत् कृणुत्ति (10.130.2) अर्थात् बुनाई करने वाले बुनकर लोग पहले बुनाई के लिए विभिन्न अवयवों को फैलाते हैं और एकत्रित करते रहते हैं। प्राचीन काल में भारतीय बुनकरों द्वारा उच्चकोटि के वस्त्रों का निर्माण किया जाता था।
- अंग्रेजी शासनकाल के पूर्व से ही भारत में ढाका की मलमल, मूसलीपट्टनम की छींट, कालीकट का केलिको, सूरत, बडोदरा व बुरहानपुर का सुनहरी जरी का सूतीवस्त्र अपनी गुणवत्ता और डिजाइनों के लिए विश्व विख्यात था।
- भारतीय वस्त्रों की लोकप्रियता से घबराकर ही तो ब्रिटिश सरकार ने इंग्लैंड में 1720 ई. में सूती छींट को प्रतिबंधित कर दिया था। इस कानून को कैलिको अधिनियम कहा जाता है।
- 1830 ई. के पश्चात भारतीय कपड़ा बाजार में ब्रिटेन के बने सूती वस्त्र अत्यधिक मात्रा में बिकने लगे थे। अब भारतीय बुनकर बेरोजगार हो गए और उनकी आर्थिक स्थिति चिन्ताजनक हो गई थी।
- उन्नीसवीं सदी के अन्त में मुम्बई, अहमदाबाद, शोलापुर, कानपुर, सूरत, नागपुर और मुदरई जैसे शहर बुनकरों के लिए मुख्य केन्द्र के रूप में विकसित हुए थे।
- ऋग्वेद में लोहे से निर्मित विभिन्न प्रकार के कृषि यंत्रों, रथों और अस्त्र-शस्त्रों आदि का वर्णन है- कार्मारो अश्मभिर्द्युभि। (9.112.2) इस मन्त्र से स्पष्ट है कि कर्मार (लोहार) लोग लोहे को पत्थर पर रगड़कर एवं आग में तपाकर तलवार एवं बाण आदि शस्त्रों का निर्माण करते थे।
- अयस्क को उच्च तापमान पर गर्म कर धातु बनाने की प्रक्रिया को प्रगलन कहते हैं। वुटज स्टील का आविष्कार लगभग 300 वर्ष ईसा पूर्व तमिलनाडु में हुआ था। यह कन्नड के उक्कू, तेलगू के हुक्कू और

तमिल व मलयालम के उरुकू शब्दों का विकृत अंग्रेजी रूप है। औपनिवेशिक काल में वुट्ज स्टील से निर्मित विविध आयुध बहुत लोकप्रिय थे।

- 1907 ई. में स्वर्ण रेखा नदी के किनारे जमशेदजी टाटा ने भारत का प्रथम लौह इस्पात का कारखाना टाटा आयरन एण्ड स्टील कम्पनी (टिस्को) की स्थापना की थी। धीरे-धीरे टिस्को ब्रिटिश साम्राज्य में इस्पात का सबसे बड़ा उत्पादक बन गया था।
- जमशेदजी टाटा ने अमरीकी भू-वैज्ञानिक चार्ल्स बेल्ल के साथ अपने बेटे दोराबजी टाटा को भारत में लौह अयस्क ढूँढने का कार्य सौंपा था। लौह अयस्क की खोज में दोराबजी टाटा घूमते-घूमते एक गांव में पहुँचे वहाँ अगरिया समुदाय के लोग टोकरियों में भरकर लौह अयस्क ले जा रहे थे। उनसे पूछने पर उन्होंने रझारा पहाड़ी (झारखण्ड) को इसका स्रोत बताया था।
- सभ्यता के विकास क्रम में भारत में अनेक नगर जैसे- अयोध्या, मथुरा, हस्तिनापुर, इन्द्रप्रस्थ, काम्पिल्य, पाटिलपुत्र, अवन्तिका, काशी, काँचीपुरम आदि प्रमुख नगर विकसित हुए थे।
- अठारहवीं सदी के अन्त में भारत में अंग्रेजी राज स्थापित होने के बाद तीन प्रेसिडेन्सी कलकत्ता (बङ्गाल), बुम्बई एवं मद्रास में विकास तेजी से हुआ था। अब इन नगरों में शासन के नए केन्द्रों की स्थापना और औद्योगिक विकास अधिक होने के कारण, इन नगरों के आसपास नवीन बस्तियों की स्थापना हुई थी।
- सल्तनत काल में दिल्ली सूफी संस्कृति का भी केन्द्र रहा है। मुगल बादशाह शाहजहाँ ने पुरानी दिल्ली (शाहजहाँनाबाद) की स्थापना 1639 ईस्वी में की थी।
- वायसराय लार्ड लिटन के द्वारा 1877 ई. में महारानी विक्टोरिया तथा 1911 ई. में जार्ज पञ्चम के भारत आगमन पर भव्यदरबार का आयोजन किया गया था। उसी समय जार्ज पञ्चम ने दिल्ली को राजधानी बनाने की घोषणा की थी।
- नई दिल्ली का निर्माण रायसीना पहाड़ी पर 10 वर्ग मील क्षेत्र में अंग्रेज वास्तुकार एडवर्ड लुटियंस एवं हर्वर्ट वेकर नामक वास्तुकारों द्वारा किया गया था।
- हमारी देश के संसद भवन का निर्माण अंग्रेजों द्वारा मध्यप्रदेश के मुरैना जिले के वटेश्वर शिव मन्दिर के स्थापत्य से प्रभावित होकर किया गया था।



## अध्याय- 9

### औपनिवेशिक भारत में समाज सुधार आन्दोलन

- 18वीं-19वीं शताब्दियों के मध्य भारत में अंग्रेजी राज स्थापित हो चुका था। हमारे समाज में पाश्चात्य सामाजिक भौतिकता, शिक्षा व दर्शन का प्रचार-प्रसार होने लगा था। अंग्रेजों ने हमारे समाज में व्याप्त अन्धविश्वासों एवं कुरीतियों की आलोचना के बहाने हमारी श्रेष्ठ सांस्कृतिक विरासत और सामाजिक लोक परम्पराओं का मजाक बनाया था।
- प्राचीनकाल से ही हमारे समाज में महिलाओं को उच्च स्थान प्राप्त है। स्त्री की दशा का ऋग्वेद में संकेत है- "अर्चन्ति नारीरपसो न विष्टभिः।" (1.92.3) अर्थात् कर्मठ नारी ही अपनी कर्मठता के कारण समाज में सम्मान पाती है। मनुस्मृति में भी कहा गया है कि- "शोचन्ति जामयो यत्र विनश्यत्याशु तत्कुलम्। न शोचन्ति तु यत्रैता वर्धते तद्धि सर्वदा ॥" (3.57) 'जिस कुल में पारिवारिक स्त्रियाँ दुर्व्यवहार के कारण शोक-संतप्त रहती हैं उस कुल का शीघ्र ही विनाश हो जाता है, उसकी अवनति होने लगती है।
- ऋग्वेद के पुरुष सूक्त में सावयव समाज सिद्धान्त का प्रतिपादन हुआ है- **ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्ब्राह्म राजन्यःकृतः। ऊरू तदस्य यद्वैश्यःपद्भ्याःशूद्रो अजायत ॥** समाज की परिकल्पना एक विराट पुरुष के रूप में की गई है। उस विराट पुरुष के ब्राह्मण मुख (विवेक-बुद्धि), क्षत्रिय भुजाएँ (सैन्य-शक्ति), वैश्य जँघाएँ (आर्थिक-शक्ति) तथा शूद्र उस विराट पुरुष के पाद (समाजसेवी) हैं।
- वैदिक सामाज्य व्यवस्था कर्म आधारित थी, जो कालान्तर में मानव विकास के साथ जन्म आधारित होकर जाति व्यवस्था में परिवर्तित हो गई। उस समय इसका एक बड़ा लाभ यह हुआ कि समाज में बेरोजगारी की समस्या नहीं थी। पारम्परिक रोजगार जन्म से ही लोगों को प्राप्त थे।
- औपनिवेशिक काल में जाति आधारित इस सामाजिक व्यवस्था में जातीय अधिक्रम में चौथी श्रेणी शोषण का शिकार हुई थी। जाति के नाम पर समाज में छुआछूत जैसी बुराइयाँ पनपीं थी। अंग्रेजों ने भारतीय समाज के अध्ययन के दौरान प्रशासनिक लाभ के लिए तथा फूट डालो, राज करो की नीति के तहत इसे जातीय विद्वेष में परिवर्तित कर प्रस्तुत किया था।
- बङ्गाल में उन्नीसवीं सदी में, जो सामाजिक सुधारों की लहर उठी, उसे भारतीय पुनर्जागरण के नाम से जाना जाता है। राजाराम मोहन राय को भारतीय पुनर्जागरण का अग्रदूत माना जाता है।
- उस समय बङ्गाल और राजस्थान में सती प्रथा का बोलबाला था। राजा राममोहन राय ने इस प्रथा को समाप्त करने के लिए सामाजिक आन्दोलन चलाया था। इस आन्दोलन से प्रभावित होकर अंग्रेजी शासन ने 1829 ई. में सती प्रथा का निषेध कर दिया था।

- उस समय कुलीन परिवारों में किसी महिला के पति की मृत्यु के उपरान्त पत्नी उसकी चिता में जलकर स्वयं को समाप्त कर लेती थी, इस कुप्रथा को सती प्रथा कहा जाता था।
- राजा राममोहन राय ने समाज सुधारों के लिए ब्रह्म समाज नामक संस्था की स्थापना 1828 ई. में कलकत्ता में की थी। ब्रह्म समाज के मुख्य उद्देश्य सामाजिक और धार्मिक एकता स्थापित करना, अंध विश्वासों और कुरीतियों का विरोध करना और एकेश्वरवाद पर जोर देना था।
- ईश्वरचन्द्र विद्यासागर के प्रयासों के कारण ही 1856 ई. में विधवा पुनर्विवाह अधिनियम द्वारा विधवा विवाह को ब्रिटिश सरकार द्वारा मान्यता मिली थी।
- दयानन्द सरस्वती ने ही सर्वप्रथम स्वधर्म, स्वदेश, स्वभाषा के विचार को भारत में पुनः जागृत किया था। इसके अतिरिक्त आपने बाल विवाह का विरोध कर, स्त्री शिक्षा और दलित उद्धार पर बल दिया था। आपके द्वारा स्थापित डी.ए.वी. विद्यालय आज भी शिक्षा प्रचार प्रसार कार्य कर रहे हैं। उन्होंने समाज सुधारों के लिए 1875 ई. में आर्य समाज की स्थापना की थी।
- ज्योतिबा फुले ने जातीय समानता पर बल दिया था। उन्होंने सत्य शोधक समाज की स्थापना 1873 ई. में पुणे में की थी। ज्योतिबा फुले ने गुलाम गिरी (1873) नामक पुस्तक लिखी थी।
- नारायण गुरु ने जातीय एकता का सन्देश दिया था। उनका महत्वपूर्ण कथन 'ओरु जाति, ओरु मतम्, और देवम् मनुस्यानु' अर्थात् मानवता की एक जाति एक धर्म और एक ईश्वर होता है।
- डॉ. केशवराव बलिराम हेडगेवार ने अपने मित्र डॉ. शिवराम मुञ्जे और डॉ. पराङ्गपे के साथ मिलकर भारत को सशक्त हिन्दू राष्ट्र एवं सामाजिक समरसता बनाने के उद्देश्य से विजया दशमी (28 सितम्बर, 1925 ई.) को राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की स्थापना की थी।
- डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने 1927 ई. से 1935 ई. तक मन्दिरों में प्रवेश के लिए आन्दोलन किया था। स्वतन्त्रता आन्दोलन में भी उनकी सक्रिय भूमिका रही थी। आपको संविधान सभा में प्रारूप समिति के अध्यक्ष तथा स्वतन्त्र भारत का प्रथम कानून मन्त्री बनाया गया था। आपको भारतीय संविधान का शिल्पकार कहा जाता है।

## अध्याय-10

### औपनिवेशिक भारत में चित्रकला

- भारतीय चित्रकला का इतिहास मानव सभ्यता के विकास के साथ ही आरम्भ हुआ था। यजुर्वेद के 30 वें अध्याय में मन्त्र सङ्ख्या 4 से 22 तक चौंसठ कलाओं का उल्लेख आया है। उन चौंसठ कलाओं में से चित्रकला भी एक कला है।
- वैदिक चिन्तन में चित्रकला के विकास की कहानी के दर्शन हमें वेद, उपनिषद्, रामायण, महाभारत, गीता आदि में होते हैं। इसके अतिरिक्त भरत मुनि का रस सिद्धान्त एवं चित्रसूत्र, रूप गोस्वामी के सौन्दर्य सिद्धान्त ग्रन्थ में चित्रकला के बारे में जानकारी मिलती है।
- पुरातात्विक खोजों में भारत में अनेक स्थलों पर सभ्यताकालीन चित्रकला के अवशेष प्राप्त हुए हैं, जैसे- भीमबेटका, सरगुजा की रामगढ़ पहाड़ी और जोगीमारा आदि गुफाओं से प्राप्त हुई है।
- औपनिवेशिक शासन के दौरान भारत में विविध क्षेत्रों में परिवर्तनों के साथ ही कला के विभिन्न रूपों, शैलियों, सामग्रियों और नई तकनीकियों तथा दृश्य कला की नई विधाओं का सूत्रपात हुआ था।
- भारत में यूरोपीय शिक्षा पद्धति के विकास के साथ-साथ यूरोपीय चित्रकला शैली का भी विकास हुआ, जिसे कम्पनी शैली कहा जाता था।
- 1834 ई. में भारत में लार्ड मैकाले द्वारा अंग्रेजी शिक्षा पद्धति के लागू होने के पश्चात चित्रकला के क्षेत्र में भी तीव्र विकास हुआ था। अंग्रेजों ने मद्रास (1850 ई.), कलकत्ता (1854 ई.), मुम्बई (1857 ई.), लाहौर (1857 ई.) में कला विद्यालय खोले थे।
- कम्पनी शैली के चित्र आज भी भारत में विक्टोरिया मेमोरियल, कलकत्ता, बिरला अकादमी आफ आर्ट, नेशनल लाइब्रेरी, दिल्ली आदि में सुरक्षित हैं। इस शैली के चित्र भारत के बाहर विदेशों में इण्डिया आफिस लाइब्रेरी एण्ड रिकार्ड्स और ब्रिटिश लाइब्रेरी लन्दन में आज भी देखे जा सकते हैं।
- कम्पनी शैली के प्रमुख चित्रकार जेम्स फॉरग्यूसन, राबर्ट मेलविले, राबर्ट स्मिथ एवं डेनियल बन्धु थे। इनमें डेनियल बन्धु (थामस डेनियल एवं विलियम डेनियल) इस परम्परा के बहुत प्रसिद्ध चित्रकार थे। ये दोनों भाई 1875 ई. में भारत आए थे।
- औपनिवेशिक काल में भारत आने वाले अंग्रेजों को यहां के रंगों से भरी शैली, पोशाक, आभूषण, उत्सव और त्यौहार आदि के प्रति आकर्षण था। इसलिए विविध उत्सवों, जुलूस, शोभा यात्राओं के चित्रों का चित्रण किया गया था।
- योहान जोफनी, रूप चित्रण शैली का प्रसिद्ध चित्रकार था। वह जर्मनी से 1780 ई. में भारत आया था।



- अनेक अंग्रेज चित्रकारों ने भारत के ऐतिहासिक स्थानों अजन्ता, एलोरा, ताजमहल, लाल किला, कुतुबमीनार आदि के चित्र बनाये थे। इसके अतिरिक्त अंग्रेज चित्रकारों ने युद्ध के चित्र बनाकर अपने-अपने शासकों को महिमामंडित किया था।
- धातु अथवा लकड़ी के छापे से कागज पर बने चित्र को उत्कीर्ण चित्र कहा जाता है। ऐसा चित्र जिसमें व्यक्ति के चेहरे और भाव-भंगिमा पर अधिक ध्यान दिया जाता है, उसे रूप चित्र कहते हैं। पोर्ट्रेट बनाने की कला को रूप चित्रण कहते हैं।
- राजा रवि वर्मा का जन्म 29 अप्रैल 1848 ई. में केरल के किलिमन्नूर नामक गांव में हुआ था। इन्होंने दरबारी चित्रकार अलागिरि नायडु से चित्रकला का प्रशिक्षण लिया था।
- राजा रवि वर्मा ने अपनी चित्र शैली में विदेशी कला व तकनीक का सम्मिश्रण किया था। इन्होंने ब्रिटिश चित्रकार लियोडोर जैनसन की तैलचित्रण पद्धति को ग्रहण किया था।
- राजा रवि वर्मा को अपनी उत्कृष्ट चित्रकारी के लिए तत्कालिन अंग्रेज गवर्नर ने स्वर्ण पदक दिया था। 1904 ई. में ब्रिटिश सरकार द्वारा इन्हें केसर-ए-हिन्द की उपाधि दी थी।
- राजा रवि वर्मा द्वारा चित्रित चित्रों में हिन्दु देवी-देवताओं और महाराणा प्रताप और शकुन्तला का दुष्यन्त के नाम पत्र लेखन सर्वश्रेष्ठ कृति है।
- खर्चा चित्र कागज के लम्बे रोल पर बनाई गई पेंटिंग होती है, जिसे लपेटा भी जा सकता है। इस चित्रकारी में बने चित्र सपाट होते हैं। इस चित्र शैली को बंगाल में पटुआ, पूर्वी भारत में कुमोर तथा उत्तरी भारत में कुम्हार के नाम से जाना जाता है।
- अवनीन्द्रनाथ ने अपने दादा गिरीन्द्र नाथ व चाचा रविन्द्र नाथ टैगोर से भारतीय कला व साहित्य की शिक्षा घर पर ही ग्रहण की थी। आगे चलकर अवनीन्द्रनाथ ने इटालियन चित्रकार गिलहार्डी एवं ब्रिटिश चित्रकार श्री पामर से कला की विधिवत शिक्षा ग्रहण की थी। उनके आरम्भिक चित्रों में पेन व स्याही से बने रेखाचित्र, व्यक्ति चित्र एवं दृश्य चित्र प्रमुख हैं।
- 1901-02 ई. में अवनीन्द्र नाथ ने जापानी कलाकार योकोहाम ताइकान तथा हिसिदा से जापानी प्रक्षालन (वाश) पद्धति का अध्ययन किया था। इस पद्धति के चित्र भारतमाता शीर्षक से प्रकाशित हुए थे। उन्होंने सर्वप्रथम भारत माता का उत्कृष्ट चित्र बनाया था।
- अवनीन्द्रनाथ ठाकुर ने इण्डियन सोसायटी आफ ओरिएण्टल आर्ट की स्थापना 1907 ई. में की थी।

## अध्याय-11

### भारत में आदिवासी

- आदिवासी दो शब्दों, आदि+वासी से मिलकर बना है, जिसका अर्थ मूलवासी होता है। इन्हें वनवासी भी कहा जाता है। प्राचीन संस्कृत साहित्य में इन्हें अत्विका कहा गया है।
- अनेक आदिवासी लोग जङ्गलों में घुम्मकड़ जीवन व्यतीत करते हैं और ये जङ्गलों से प्राप्त उत्पादों जैसे- जड़ी-बूटी, कंद, मूल व फल आदि वस्तुओं से अपना जीवन यापन करते हैं।
- आदिवासी जातियाँ आज भी उत्तरी-पूर्वी भारत, झारखण्ड, उड़ीसा, मध्य प्रदेश, राजस्थान, गुजरात, पश्चिम बङ्गाल, आन्ध्रप्रदेश, कर्नाटक आदि राज्यों में निवास करती हैं।
- वर्तमान में संथाल, मुण्डा, भील, मीणा, सहरिया, गरासिया, कोल आदि प्रमुख आदिवासी जातियाँ हैं। उन्नीसवीं सदी तक ये जनजातियाँ देश के विभिन्न भागों में आदिवासी विभिन्न प्रकार की गतिविधियों जैसे- कृषि, आखेटक और पशुपालन आदि में सक्रिय रहते थे।
- भारत में अंग्रेजी राज की स्थापना के बाद तीव्र औद्योगिकरण के कारण अंग्रेजों ने उनके आवास और जीवन में हस्तक्षेप करना शुरू कर दिया था। परिणामतः उनके आवास, व्यवसाय एवं स्वतन्त्रता आदि पर व्यापक प्रभाव पड़ा।
- ब्रिटिश शासन में आदिवासीयों के मुखिया के कार्य व अधिकारों में व्यापक परिवर्तन हुए थे। इनको स्वामित्व तो मिला पर उसकी शासकीय शक्तियाँ समाप्त हो गई थीं। अंग्रेजी नियमों को मानना उनके लिए अनिवार्य हो गया था।
- ब्रिटिश शासन की शोषणवादी नीति से व्यथित होकर, आदिवासी समुदाय ने ब्रिटिश शासन का खुल्लम-खुल्ला प्रतिरोध करना प्रारम्भ कर दिया था। इस समय सम्पूर्ण देश में स्वाधीनता की अलख जग रही थी। इसलिए जनजातीय आन्दोलनों पर भी स्वाधीनता संग्राम का प्रभाव पड़ा।
- आदिवासी जनजातियाँ अंग्रेजों को दीकू अर्थात् विदेशी लोग मानती थीं।
- 1831 ई.-32 ई. में कोल विद्रोह, 1855 ई. में संथाल तथा 1940 ई. में वली आदि जनजातियों के विद्रोह हुए थे। आदिम जनजातियों में मुण्डा जनजाति के लोगों का यह मानना था कि अंग्रेजी शासन से पूर्व हमारा जीवन बहुत अच्छा था। हमें पुनः उस स्वर्ण युग को प्राप्त करना होगा। आदिवासियों के स्वर्ण युग के स्वप्न को पूरा करने का प्रयास, आदिवासी नेता विरसा मुण्डा ने किया था।
- विरसा का जन्म 15 नवम्बर 1875 ई. को वर्तमान झारखण्ड राज्य के राँची के पास उलीहातु गाँव में मुण्डा जनजाति के कबीले में हुआ था।



- विरसा ने अपने समुदाय से बुराइयों को छोड़ने का आह्वान किया कि, जब तक आप लोग शराब पीना, जादू टोने में विश्वास आदि बुराइयों को नहीं छोड़ोगें तब तक स्वर्ण युग स्थापित नहीं होगा। विरसा के विचारों एवं उपदेशों से मुण्डा जनजाति की जीवन शैली में परिवर्तन हुए और वे पुनः मुण्डा राज की स्थापना का स्वप्न देखने लगे।
- 1895 ई. में विरसा ने अपने शिष्यों से कहा कि हमें अपने गौरव पूर्ण अतीत को प्राप्त करने के लिए भूस्वामियों, जमींदारों, महाजनों एवं अंग्रेजों से संघर्ष करना होगा, क्योंकि इन लोगों ने हमारी परम्परागत व्यवस्था को नष्ट किया है।
- विरसा मुण्डा ने इस आन्दोलन में 'अबुआ दिशुम अबुआ' अर्थात् हमारा देश हमारा राज का नारा दिया और जङ्गल जमीन की बात छोड़ी थी। अंग्रेजी हुकूमत ने इस आन्दोलन को सख्ती से दबाया था।
- 1900 ई. में विरसा की मृत्यु के बाद मुण्डा आन्दोलन समाप्त हो गया था। लेकिन अंग्रेजी शासन को ऐसे कानून बनाने के लिए विवश होना पड़ा कि भविष्य में कोई बाहरी व्यक्ति इनकी जमीनों पर कब्जा न कर सके।
- संविधान के अनुच्छेद-46 में कमजोर वर्ग, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति आदि के शैक्षणिक, आर्थिक और सामाजिक उन्नयन हेतु कार्य करने का प्रावधान है।
- अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति (अत्याचार निवारण) अधिनियम 1989 के द्वारा अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजातियों पर उच्च जातियों के द्वारा किये जाने वाले भेदभाव और हिंसा पर पाबन्दी लगाई गई है।
- एम्प्लायमेंट आफ मैनुअल स्केवेंजर्स एंड कंस्ट्रक्शन आफ ड्राई लैट्रीन्स (प्राहिविशन) 1993 एक्ट बनाया है, जो सिर पर मैला उठाने वाले और सूखे शौचालय निर्माण पर पाबन्दी लगाता है।
- संविधान के अनुच्छेद 335 एवं 338ए के अन्तर्गत राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग की स्थापना की गई है और अनुसूचित जातियों तथा जनजातियों के सरकारी क्षेत्रों में नौकरी पाने के अधिकार को सुरक्षित किया गया है।
- अनुसूचित जनजाति और अन्य पारंपरिक वन निवासी (वन अधिकारों की मान्यता) अधिनियम, 2006 अनुसूचित जनजातियों और अन्य वनवासियों के अधिकारों को मान्यता देता है।
- हमारे देश की वर्तमान राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू, ओडिशा राज्य के संथाल जनजाति परिवार से हैं।



## अध्याय-12

### राष्ट्रीय आन्दोलन (1885 ई. से 1947 ई. तक)

- राष्ट्र से तात्पर्य लोगों के ऐसे समूह से है, जो वर्ण, जाति, इतिहास, संस्कृति, भाषा के साथ निश्चित भूभाग में निवास करते हैं।
- राष्ट्रवाद में समान परम्परा, समान हितों, समान राजनीतिक इच्छा शक्ति के साथ राष्ट्र को एकता के सूत्र में बाँधने की सामुदायिक भावना होती है, जो लोगों को सुदृढ और संगठित करती है, इसलिए राष्ट्रवाद को अमूर्त माना जाता है।
- ऋग्वेद में कहा गया है कि- "सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।" (10.191.2) अर्थात् हम सब एक साथ चलें, एक साथ बोलें, तथा हमारे मन की भावना भी समान हो।
- अथर्ववेद में भी कहा गया है कि "माताभूमिः पुत्रो अहं पृथिव्याः।" (12.1.12) अर्थात् यह भूमि (भारत) हमारी माता है और हम इसके पुत्र हैं।
- विश्व के प्रथम महाकाव्य रामायण में उल्लेख है कि- "जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।" अर्थात् जन्म देने वाली माता और जन्मभूमि स्वर्ग से भी बढकर हैं।
- भारत में नवोदित कहा जाने वाला राष्ट्रवाद वास्तव में हमारी नैसर्गिक राष्ट्रीय भावना ही है। क्योंकि आधुनिक भारत में किसी नये राष्ट्र एवं राष्ट्रवाद का उदय नहीं हुआ था।
- 28 दिसम्बर, 1885 ई. को 'एलन आक्टोवियन ह्यूम' नामक अंग्रेज ने, अंग्रेजी शासन के प्रति भारतीय लोगों के बढ़ते असंतोष को नियन्त्रित करने के लिए 'इण्डियन नेशनल काँग्रेस' ( भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस) नामक संस्था का गठन 'बम्बई के गोकुलदास तेजपाल' भवन में किया था।
- भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस प्रथम अध्यक्ष व्योमकेश चन्द्र बनर्जी थे। दादाभाई नौरोजी, बदरुद्दीन तैय्यब, एस सुब्रमण्यम अय्यर आदि सहित 72 संस्थापक सदस्य थे।
- 1905 ई. में बङ्गाल का विभाजन राष्ट्रीय एकता को बढ़ाने की दृष्टि से विशेष प्रभावकारी रहा था। उसी समय भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सदस्यों ने पूर्ण स्वतन्त्रता की आवाज को बुलन्द किया था और बाल गंगाधर तिलक ने 'स्वतन्त्रता मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है, मैं इसे लेकर रहूँगा' का नारा दिया था।
- वैचारिक मतभेदों के आधार पर 1907 ई. में कांग्रेस, नरमदल (उदारवादी) और गरम दल (राष्ट्रवादी) में विभाजित हो गई थी। नरम दल के नेता- दादा भाई नारौजी, फिरोज शाह मेहता, उमेशचन्द्र बनर्जी आदि और गरम दल के प्रमुख नेता- लोकमान्य तिलक, विपिनचन्द्र पाल एवं लाला लाजपत राय थे।
- 1893 ई. में महात्मा गाँधी अपने मित्र दादा अब्दुला का केस लड़ने के लिए दक्षिण अफ्रिका गए थे।



- मोहनदास करमचन्द्र गाँधी ने दक्षिण अफ्रीका में निश्चय किया था कि मुझे शोषित जनों को संगठित कर संघर्ष करने के लिए प्रेरित करना है और अपने इस संकल्प में गाँधीजी ने 1914 ई. तक अभूतपूर्व सफलता भी प्राप्त की थी। उनकी इस सफलता के मूल में अहिंसा और सत्याग्रह रहा था।
- 1915 ई. में महात्मा गाँधी का भारत आगमन हुआ था। यहाँ आकर उन्होंने सर्वप्रथम भारत दर्शन यात्रा प्रारम्भ की और इस यात्रा से यहाँ के लोगों की आवश्यकताओं और दयनीय स्थिति को समीप से देखा था। भारतीय जनमानस की स्थिति को देखकर बेहद दुखी गाँधीजी ने ब्रिटिश शासन की अधीनता से देश को मुक्ति दिलाने का संकल्प लिया था।
- 19 अप्रैल 1917 ई. को किसानों के साथ मिलकर गाँधीजी ने अंग्रेजों के विरुद्ध सत्याग्रह प्रारम्भ किया था। अन्त में सरकार को किसानों की माँग माननी पड़ी थी।
- रोलट एक्ट के विरुद्ध गाँधीजी द्वारा 24 फरवरी 1919 ई. को मुम्बई की एक सभा में राष्ट्रीय स्तर पर सत्याग्रह आन्दोलन का आह्वान किया गया था।
- रोलट एक्ट के विरोध में 13 अप्रैल 1919 ई. को सैफूद्दीन किचलू और सत्यपाल की गिरफ्तारी के विरोध में पञ्जाब के जलियाँवाला बाग में आम जनसभा का शान्तिपूर्वक आयोजन हो रहा था। उसी समय जनरल डायर के द्वारा लोगों पर गोलियाँ चलवाई गई थी, जिसमें हजारों भारतीय शहीद हो गए थे।
- गदर पार्टी की स्थापना प्रवासी भारतीयों लाला हरदयाल, सोहन सिंह भकाना और करतार सिंह द्वारा 1913 ई. में अमेरिका में की गई थी।
- स्वराज पार्टी की स्थापना 1923 ई. में चितरञ्जन दास और मोती लाल नेहरू ने की थी।
- पूना समझौता 24 सितम्बर 1932 ई. महात्मा गाँधी और डॉ. भीमराव अम्बेडकर के मध्य यरवदा जेल में हुआ था।
- असहयोग आन्दोलन का प्रस्ताव कांग्रेस के नागपुर अधिवेशन में 1920 ई. में पारित हुआ था। अपने आन्दोलन के विस्तार के लिए कांग्रेस ने खिलाफत आन्दोलन (सन् 1919 से 1921 तक) के नेताओं से हाथ मिलाया था।
- 1922 ई. में चौरी-चौरा कांड के कारण, गाँधीजी ने आन्दोलन को स्थगित कर दिया था।
- असहयोग आन्दोलन के स्थगित होने के बाद क्रान्तिकारियों की विचारधारा में परिवर्तन हुआ था और वे हिन्दुस्तान रिपब्लिक एसोसिएशन (1924 ई.) में सम्मिलित हो गए थे। इस संस्था का गठन राम प्रसाद बिस्मिल, सचिन्द्र सान्याल और योगेश चन्द्र चटर्जी ने किया था।
- हिन्दुस्तान रिपब्लिक एसोसिएशन का मुख्य उद्देश्य भारत में अंग्रेजी राज को समाप्त कर गणतन्त्र की स्थापना करना था।



- हिन्दुस्तान रिपब्लिक एसोसिएशन के सदस्यों ने ब्रिटिशराज को क्षति पहुंचाने के लिए काकोरी में रेलगाड़ी से जा रहे ब्रिटिश राजकोष को लूट लिया था, जिसे इतिहास में काकोरी घटना (9 अगस्त, 1925 ई.) के नाम से जाना जाता है।
- 1928 ई. में साइमन कमीशन भारत आया था, जिसके विरोध में देश में जगह-जगह पर आन्दोलन शुरू हुए थे। लाहौर में कांग्रेस के राष्ट्रवादी नेता लाला लाजपत राय की साण्डर्स द्वारा किये गये लाठी चार्ज में हुई हत्या ने देश को झकझोर दिया था।
- सरदार भगत सिंह के नेतृत्व में बहरी अंग्रेज सरकार को जगाने के लिए असेम्बली (8 अप्रैल 1929 ई.) में बम फेंका गया था। इसके पश्चात लाहौर षडयंत्र के आरोप में भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु को 23 मार्च 1931 ई. को फांसी दे दी गई थी।
- भारत में साइमन कमीशन (1927 ई.), कांग्रेस का लाहौर अधिवेशन (1929 ई.) और ब्रिटिश सरकार के नमक पर कर की घटना से क्षुब्ध भारतीय जनमानस द्वारा गाँधीजी के नेतृत्व में पुनः आन्दोलन की तैयारी की गई थी।
- गाँधीजी ने 6 अप्रैल, 1930 ई. को अपने हाथों से नमक बनाकर इस कानून का सार्वजनिक रूप से उल्लंघन किया था। इस घटना को भारतीय इतिहास में 'दाण्डी' मार्च के नाम से जाना जाता है। इसे सविनय अवज्ञा आन्दोलन भी कहते हैं।
- भारत के महान क्रांतिकारी चन्द्रशेखर आजाद का जन्म 23 जुलाई 1906 ई. को अलिराजपुर, मध्यप्रदेश में हुआ था। देश में सक्रिय क्रान्ति के लिए आप हिन्दुस्तान रिपब्लिक एसोसिएशन से जुड़े।
- 9 सितम्बर सन् 1928 को दिल्ली में आपके प्रयासों से भगतसिंह की नौजवान सभा का इसमें विलय हो गया था, जिसे बाद में हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन नाम दिया गया था। इस नये एसोसिएशन के सेना प्रमुख चन्द्रशेखर आजाद थे।
- 27 फरवरी 1931 ई. को प्रयागराज के एल्फ्रेड पार्क में अचानक आजाद और पुलिस के मध्य गोलाबारी हुई थी। जब उनके पास एक गोली बची तो उसे अपने सिर में मारकर आत्मबलिदान कर लिया था।
- भारतीयों द्वारा जारी संघर्ष के कारण ब्रिटिश सरकार ने 1935 ई. में भारतीय शासन अधिनियम के अन्तर्गत भारत में प्रान्तीय स्वायत्ता प्रदान की थी।
- ब्रिटिश सरकार की घोषणा के पश्चात् 1937 ई. में प्रान्तीय विधायिकाओं का चुनाव कराया गया। चुनाव के परिणाम में 11 में से 7 प्रान्तों में कांग्रेस की सरकार बनी थी। इसके 2 वर्ष पश्चात् 1939 ई. में द्वितीय विश्वयुद्ध शुरू हो गया था।

- गांधीजी के आह्वान पर 8 अगस्त 1942 ई. में भारत छोड़ो आन्दोलन प्रारम्भ हुआ था। गाँधीजी ने इस आन्दोलन में करो या मरो का नारा दिया था।
- सुभाष चन्द्र बोस 1938 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गए थे। महात्मा गाँधी से वैचारिक मतभेदों के चलते उन्होंने कांग्रेस को छोड़ दिया था।
- द्वितीय विश्वयुद्ध के समय सुभाष चन्द्र बोस ने अपनी राजनीतिक दूरदर्शिता के आधार पर देश को एकजुट करने के लिए 'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा' का नारा 1942 में दिया था।
- 1943 ई. में रासबिहारी बोस ने 'आजाद हिन्द फौज' का गठन कर, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस को सेनापति बनाया था। सुभाष चन्द्र बोस ने 'दिल्ली चलो' का नारा दिया था।
- 18 अगस्त 1945 ई. में रहस्मयी तरीके से एक विमान हादसे में मौत हो गई थी। महात्मा गाँधी को सर्वप्रथम राष्ट्रपिता सुभाष चन्द्र बोस ने कहा था।
- 1945 ई. में द्वितीय विश्व युद्ध समाप्त होने के पश्चात संविधान सभा के गठन के लिए 1946 ई. को चुनाव हुए थे। इस चुनाव में कांग्रेस पार्टी ने बड़ी जीत प्राप्त की जबकी आरक्षित सीटों पर मुस्लिम लीग की विजय हुई थी।
- मुस्लिमों ने द्विराष्ट्र सिद्धान्त के अन्तर्गत मुस्लिमों के लिए अलग पाकिस्तान राष्ट्र की मांग रखी थी। 16 अगस्त 1946 ई. को मुस्लिम लीग द्वारा ने प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस मनाकर पूरे भारत में जगह-जगह दंगे फैलाए गये, जिसमें लाखों लोग मारे गए थे।
- पाकिस्तान को 14 अगस्त 1947 ई. को एक अलग राष्ट्र मान लिया गया था। इस प्रकार भारत को 15 अगस्त 1947 को ब्रिटिश शासन से मुक्ति मिली थी।

यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्



## अध्याय- 13

### स्वतन्त्र भारत

- 1945 ई. में द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति के पश्चात ब्रिटेन ने अपनी भारत सम्बन्धी नीति की घोषणा की थी। इसके अन्तर्गत जब कैबिनेट मिशन (तीन मंत्रियों के दल) को 1946 ई. को भारत में संविधान सभा के निर्माण के लिए लाया गया था।
- 6 दिसम्बर 1946 ई. में भारत में संविधान सभा का गठन किया गया था। भारतीय संविधान निर्मात्री सभा के कुल 389 सदस्यों में से 292 प्रान्तों से निर्वाचित सदस्य, 4 सदस्य केन्द्र शासित प्रदेशों से एवं 93 सदस्य राजा महाराजा थे।
- भारतीय संविधान 2 वर्ष 11 माह 18 दिन में बनकर तैयार हुआ था। भारत के नये संविधान को 26 नवम्बर 1949 ई. को संविधान सभा द्वारा स्वीकृति प्रदान की गई थी। 26 जनवरी 1950 ई. में भारत को गणतन्त्र घोषित कर भारतीय संविधान लागू किया गया था।
- आजादी के समय भारत विभाजन के परिणामस्वरूप 70 से 80 लाख लोग पाकिस्तान से विस्थापित होकर भारत आए थे।
- स्वतंत्र भारत के प्रथम और अन्तिम गवर्नर जनरल सी. राजगोपालाचारी थे। संविधान सभा के अस्थायी अध्यक्ष डॉ. सचिदानन्द सिन्हा थे। संविधान सभा के स्थायी अध्यक्ष डॉ. राजेन्द्र प्रसाद थे।
- औपनिवेशिक काल में भारत में दो प्रकार के प्रान्त थे- प्रथम, वे प्रान्त जो सीधे ब्रिटिश शासन से सञ्चालित थे। दूसरे, वे देशी रियासतें जिन पर राजा-महाराजाओं का शासन चलता था तथा वे ब्रिटिश आधिपत्य में शासन करते थे। स्वतन्त्रता के समय भारत में कुल 565 देशी रियासतें थीं।
- सरदार बल्लभ भाई की दूरदर्शिता एवं कूटनीति से अधिकांश देशी रियासतों का 15 अगस्त 1947 से पूर्व भारत में विलय कर लिया गया था।
- गुजरात राज्य के भरूच जिले में नर्मदा नदी के किनारे केवडिया में स्टैच्यू ऑफ यूनिटी नाम से सरदार पटेल को समर्पित 182 मीटर ऊँची धातु से बनी संसार की सबसे ऊँची मुर्ति है। भारत सरकार की महत्वाकांक्षी परियोजना को 31 अक्टूबर 2018 को राष्ट्र को समर्पित किया गया था।
- 1948 ई. में जूनागढ़ की प्रजा ने अपने नवाब के खिलाफ विद्रोह कर अपना विलय भारत में कर दिया था। हैदराबाद का निजाम जन भावनाओं की अनदेखी कर भारत से अलग रहना चाहता था। सितम्बर 1948 ई. में सरदार पटेल ने आपरेशन पोलो चलाकर हैदराबाद का विलय भारत में कर दिया था।

- भारत के एकीकरण में सरदार पटेल के सहयोगी तत्कालीन गृह सचिव वी.पी. मेनन थे।
- डॉ.श्यामा प्रसाद मुखर्जी की भारतीय संविधान की धारा 370 के अन्तर्गत कश्मीर में प्रवेश के लिए परमिट व्यवस्था का विरोध करते हुए 23 जून 1953 ई. को जम्मू में मृत्यु हो गई थी।
- 5 अगस्त 2019 को भारत सरकार ने धारा 370 एवं 35 ए के समाप्ति की घोषणा करते हुए, जम्मू कश्मीर राज्य को दो केन्द्र शासित प्रदेशों- जम्मू-कश्मीर एवं लद्दाख में विभाजित कर, पुर्णतः अधिगृहित कर लिया। अब विवाद का मुद्दा पाक अधिकृत कश्मीर का है।
- सर्वप्रथम 1953 ई. में भाषाई आधार पर आन्ध्रप्रदेश राज्य का गठन किया गया था।
- 22 दिसम्बर 1953 ई. में राज्य पुनर्गठन आयोग (फजल अली आयोग) गठित किया गया था। इस आयोग ने 1955 ई. में अपनी रिपोर्ट में कहा कि राष्ट्रीय एकता, प्रशासनिक एवं वित्तीय व्यवहार, आर्थिक विकास आदि के लिए भाषाई आधार पर राज्यों का पुनर्गठन किया जाना चाहिए।
- 1956 ई. में सरकार ने राज्य पुनर्गठन अधिनियम पास किया था। इसके अन्तर्गत नये 14 राज्य तथा 6 केन्द्रशासित प्रदेश बनाये गये थे।
- 1960 ई. में बम्बई प्रान्त को महाराष्ट्र व गुजरात में बाँट दिया गया, 1966 ई. में पञ्जाब में से हिन्दी भाषी क्षेत्र हरियाणा राज्य बनाया गया था।
- नवम्बर 2000 ई. में उत्तरप्रदेश में से उत्तराखण्ड, मध्यप्रदेश में से छत्तीसगढ़ एवं बिहार को विभाजित कर झारखण्ड राज्य और 2 जून 2014 को तेलंगाणा को आन्ध्रप्रदेश में से विभाजित कर अलग राज्य बनाया गया था।
- भारत सरकार ने 5 अगस्त, 2019 को ऐतिहासिक जम्मू-कश्मीर पुनर्गठन अधिनियम- 2019 द्वारा धारा 370 के समापन की घोषणा कर दी। भारत में कुल 28 राज्य और 8 केन्द्र शासित प्रदेश हैं।
- 1950 ई. में योजना आयोग की स्थापना की गई थी। उसी के अन्तर्गत विकास कार्यों के लक्ष्य निर्धारित कर योजनाएं बनाई गई, जिन्हें 'पंचवर्षीय योजना' कहा जाता है।
- 2015 ई. में योजना आयोग के स्थान पर नीति आयोग का गठन किया गया है। नीति आयोग का पदेन अध्यक्ष प्रधानमंत्री और सभी राज्यों के मुख्यमंत्री व केन्द्र शासित प्रदेशों के उपराज्यपाल सदस्य हैं।
- हमने पिछले 75 वर्षों में देश में राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और भाषाई आदि विविधताओं को दृष्टिगत रखते हुए राष्ट्रीय एकता और अखण्डता को अक्षुण्ण बनाए रखते हुए 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' के लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में निरन्तर आगे बढ़ रहे हैं।

### अध्याय- 14

#### भारतीय संविधान

- वैदिक वाङ्मय में भी राजा, प्रजा आदि के लिए लौकिक व्यवहार एवं निजी आचरण के नियमों का उल्लेख किया गया है, जो आज हमारे संविधान में भी दृष्टिगोचर होते हैं।
- "आत्मवत् सर्वभूतेषु" अर्थात् सभी जीव समान हैं, इसकी पुष्टि समानता के अधिकार से होती है। "यत्संयमो न वि यमो वि यमो यन्न संयमः।" (अथर्व.4.3.7) अर्थात् जो व्यक्ति सदा नियन्त्रण में रहते हैं, उन्हें छोड़ना चाहिए और जो हमेशा नियन्त्रण से बाहर रहते हैं, उन पर नियन्त्रण करना चाहिए।
- किसी राष्ट्र या राज्य में शासन, व्यक्ति और उनके परस्पर सम्बन्धों को निर्देशित करने वाले सभी नियमों और कानूनों का सङ्ग्रह संविधान कहलाता है।
- जिस संविधान में लिखित प्रावधान होते हैं, उसे लिखित संविधान कहते हैं, जैसे-भारत एवं संयुक्त राज्य अमेरिका आदि का संविधान।
- जिस संविधान में प्रावधान लिखे नहीं जाते हैं अपितु परम्पराओं के आधार पर चलाए जाते हैं, उन्हें अलिखित संविधान कहते हैं। जैसे- ब्रिटेन का संविधान।
- असहयोग आन्दोलन के समय 1922 ई. में महात्मा गांधी ने कहा था कि, 'भारत का राजनीतिक भविष्य भारतीय स्वयं बनाएँगे।'
- 1934 ई. में संविधान सभा के गठन की माँग को भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने पहली बार अपनी अधिकृत कार्यसूची में सम्मिलित किया था।
- ब्रिटिश सरकार ने संविधान सभा की माँग को स्वीकार कर 24 मार्च 1946 ई. में कैबिनेट मिशन को भारत भेजा था, जिसने अपनी रिपोर्ट में ब्रिटिश सरकार से भारतीय संविधान सभा के गठन की सिफारिश की थी। कैबिनेट मिशन के अध्यक्ष सर स्टेफर्ड क्रिप्स थे इसलिए इसे क्रिप्स मिशन भी कहा जाता है।
- संविधान सभा के 296 जनप्रतिनिधियों को जुलाई 1946 में चुनाव द्वारा तथा 93 को रियासतों से मनोनीत किया गया था।
- संविधान सभा की प्रथम बैठक 9 दिसम्बर 1946 ई.को सच्चिदानन्द सिन्हा की अध्यक्षता में हुई थी। 11 दिसम्बर 1946 ई. की बैठक में डॉ. राजेन्द्र प्रसाद को संविधान सभा का स्थायी अध्यक्ष चुना गया था।

- संविधान निर्माण के लिए अनेक समितियों का गठन किया गया था। प्रारूप समिति के अध्यक्ष डॉ. भीमराव अम्बेडकर थे।
- संविधान के प्रारूप पर 114 दिन चर्चा होने के पश्चात् 21 फरवरी 1948 ई. में प्रारूप समिति ने इसे संविधान सभा में प्रस्तुत किया था। तीन बार संविधान सभा में इसका वाचन कर, 26 नवम्बर 1949 ई. को संविधान सभा ने संविधान को पारित कर इसके कुछ प्रावधानों को लागू कर दिया था इसलिए प्रतिवर्ष 26 नवम्बर को संविधान दिवस मनाया जाता है।
- संविधान सभा की अंतिम बैठक 24 जनवरी 1950 ई. को हुई थी और उसी दिन डॉ. राजेन्द्र प्रसाद को देश का प्रथम राष्ट्रपति चुना गया था। 26 जनवरी 1950 को संविधान को पूर्णतः लागू कर दिया गया। 1950 ई. में भारतीय संविधान में कुल 22 भाग 395 अनुच्छेद और 8 अनुसूचियां थीं।
- भारतीय संविधान विश्व का सबसे लम्बा हस्तलिखित संविधान है, जिसे प्रेम बिहारी नारायण रायजादा ने इटैलिक शैली में लिखा था।
- वर्तमान (2020 ई.) में हमारे संविधान में कुल 25 भाग 395 अनुच्छेद और 12 अनुसूचियां हैं।
- 42वें संविधान संशोधन (1976 ई.) द्वारा इसमें समाजवादी, पंथनिरपेक्ष तथा अखण्डता शब्दों को जोड़ा गया था।
- संविधान की सर्वोच्चता, केन्द्र और राज्य सरकारों में शक्तियों का विभाजन, स्वतन्त्र न्यायपालिका, संघात्मक शासन के प्रधान लक्षण हैं।
- हमारे देश में संसदीय शासन की स्थापना की गई है, जिसमें कार्यपालिका का उत्तरदायित्व व्यवस्थापिका के प्रति होता है। इस व्यवस्था में राष्ट्रपति संवैधानिक अध्यक्ष होता है और शासन की समस्त शक्तियों का प्रयोग प्रधानमन्त्री एवं उसकी मंत्रिपरिषद करती है।
- संविधान के अनुसार हमारा देश एक पंथ निरपेक्ष राष्ट्र है अर्थात् राज्य का कोई धर्म नहीं होगा, राज्य सभी धर्मों का समान रूप से आदर तथा उनकी रक्षा करेगा।
- भारतीय संविधान में अपने नागरिकों के अधिकारों की रक्षा के लिए छः मौलिक अधिकारों का वर्णन संविधान के भाग-3 के अनुच्छेद 12 से 32 तक में है- 1. समानता का अधिकार (अनुच्छेद 14-18) 2. स्वतन्त्रता का अधिकार (अनुच्छेद 19-22) 3. शोषण के विरुद्ध अधिकार (अनुच्छेद 23-24) 4. धार्मिक स्वतन्त्रता का अधिकार (अनुच्छेद 25-28) 5. सांस्कृतिक और शैक्षणिक अधिकार (अनुच्छेद 29-30) 6. संवैधानिक उपचारों का अधिकार (अनुच्छेद 32)।
- अनुच्छेद 31 में सम्पदों के अर्जन के लिये उपबन्ध करने की विधि, कुछ अधिनियमों और विनियमों का विधिमान्यकरण तथा कुछ निर्देशक तत्वों को प्रभावी करने वाली विधियाँ हैं। अनुच्छेद 33 में मूल अधिकारों के उपान्तरण की शक्ति संसद को प्रदान की गई है।

- अनुच्छेद 34 में सैन्य शासन लागू होने पर मूल अधिकारों के निर्बन्धन का प्रावधान है। अनुच्छेद 35 में भाग तीन के प्रावधानों को प्रभावी करने की विधि दी गई है।
- नीति निर्देशक तत्वों का उद्देश्य लोक कल्याणकारी राज्य की स्थापना करना है। इनका उल्लेख संविधान के भाग- 4 में अनुच्छेद 36 से 51 तक किया गया है।
- हमारे संविधान में नागरिकों के पालानार्थ ग्यारह मौलिक कर्तव्यों का उल्लेख संविधान के भाग- 4 अनुच्छेद 51 (क) में हुआ है। इन मौलिक कर्तव्यों का पालन देश के प्रत्येक नागरिक को करना चाहिए।
- हमारे देश का प्रत्येक नागरिक जिसकी उम्र 18 वर्ष या उससे अधिक है, उसे बिना भेदभाव के अपने मताधिकार का प्रयोग करने का अधिकार संविधान द्वारा दिया गया है।
- हमारे संविधान में देश के नागरिकों के लिए इकहरी नागरिकता का प्रावधान किया गया है अर्थात् भारत देश का नागरिक देश के किसी भी भाग में भ्रमण करने, निवास करने के लिए स्वतन्त्र है।
- संयुक्त राज्य अमेरिका से मौलिक अधिकार, स्वतन्त्र न्याय पालिका, न्यायिक पुनरावलोकन, संविधान की सर्वोच्चता, वित्तीय आपात आदि, आयरलैण्ड से राज्य के नीति निर्देशक तत्व, ब्रिटेन से संसदीय शासन, एकल नागरिकता एवं विधि निर्माण प्रक्रिया, आस्ट्रेलिया से प्रस्तावना की भाषा, समवर्ती सूची, केन्द्र-राज्य सम्बन्ध आदि, रूस से मौलिक कर्तव्य और जापान से विधिक प्रक्रिया के प्रावधान लिये गये हैं। भारतीय संविधान पर सर्वाधिक प्रभाव ब्रिटिश सरकार के भारतीय शासन अधिनियम-1935 ई. का पड़ा है।
- संविधान के अनुच्छेद 25 से 28 तक धार्मिक स्वतन्त्रता का प्रावधान किया गया है। यदि कोई व्यक्ति दूसरे व्यक्ति की धार्मिक स्वतन्त्रता में हस्तक्षेप करता है, तो पीड़ित व्यक्ति सर्वोच्च न्यायालय में उसके खिलाफ अपील कर सकता है तथा इसे मौलिक अधिकारों का हनन माना जाता है।

## अध्याय- 15

### हमारी संसद

- वैदिक वाङ्मय में जिस सभा या समिति का उल्लेख प्राप्त होता है, वर्तमान में व्यवस्थापिका अर्थात् संसद उसका ही प्रतिरूप है।
- "सभा च मा समितिश्चावतां प्रजापतेर्दुहितरौ संविदाने । येना संगच्छा उप मा स शिक्षाचारु वदानि पितरः सङ्गतेषु॥" (अथर्व. 7.12.1) अर्थात् सभा और समिति ये दोनों प्रजा का पालन करने वाले राजा के द्वारा पुत्रीवत् पालने योग्य हैं और वे दोनों राजा की रक्षा करें, जिससे मैं मिलूँ, वह मुझे शिक्षा दें। हे रक्षकों! सभाओं में, मैं उत्तम रीति से बोलूँ।
- "ये राजानो राजकृतः।" (अथर्व. 3.5.7) अर्थात् प्रजाजन, सभा और समिति के सदस्य होते थे। स्वयं राजा समिति के सदस्यों को "पितरः" (अथर्व. 7.12.1) कहकर सम्बोधित करता है। यहां पितर शब्द का अर्थ पिता न होकर रक्षक हैं। "भद्रा हि नः प्रमतिरस्य संसद्यग्रे।।" (ऋग्वेद 1.94.1) अर्थात् संसद में हमारी बुद्धि अच्छे विचारों से युक्त हो।
- संसद सभी को साथ में लेकर कार्य करने वाली एक राजनीतिक व्यवस्था है। भारतीय संसदीय शासन व्यवस्था में संवैधानिक प्रधान राष्ट्रपति होता है जबकि व्यवहारिक प्रधान, प्रधानमंत्री होता है।
- किसी भी कानून को बनाने या उसे लागू करने की शक्ति संसद के पास होती है। संसद के दोनों सदनों की संयुक्त अधिवेशन की अध्यक्षता राष्ट्रपति करता है।
- भारतीय संसद में दो सदन हैं- 1. लोकसभा अर्थात् निम्न सदन 2. राज्य सभा अर्थात् उच्च सदन।
- लोकसभा के सदस्यों का चुनाव जनता द्वारा प्रत्यक्ष मतदान प्रणाली द्वारा किया जाता है। वर्तमान में लोकसभा में 543 सदस्य हैं। इनकी अधिकतम सङ्ख्या 552 सदस्यों तक हो सकती है। लोकसभा की कार्यवाही का सञ्चालन लोकसभा अध्यक्ष करता है। लोकसभा सदस्यों का कार्यकाल 5 वर्ष होता है।
- राज्यसभा के सदस्यों का चुनाव सभी राज्यों व संघ शासित राज्यों की विधानसभाओं के निर्वाचित सदस्यों द्वारा किया जाता है।
- राज्यसभा में वर्तमान में कुल 245 सदस्य हैं, जिसमें से 233 सदस्यों का अप्रत्यक्ष मतदान द्वारा निर्वाचन किया जाता है। राष्ट्रपति द्वारा कला, खेल, साहित्य, विज्ञान एवं समाज सेवा इत्यादि क्षेत्रों में ख्याति प्राप्त 12 सदस्यों का मनोनयन किया जाता है।
- उपराष्ट्रपति राज्यसभा का पदेन सभापति होता है, जो राज्यसभा की कार्यवाही का सञ्चालन करता है। राज्यसभा के सदस्यों का कार्यकाल 6 वर्ष का होता है।



- भारतीय संसद में 1. कानून निर्माण कर, उसे लागू करना। 2. संविधान में संशोधन करना। 3. संसद, बजट के अनुसार ही सरकार को आय और व्यय करने की सहमति देती है। 4. महाभियोग सम्बन्धी शक्ति। 4. निर्वाचन सम्बन्धी शक्ति निहित होती है।
- संसद सदस्य अविश्वास प्रस्ताव, कामरोको प्रस्ताव, निन्दा प्रस्ताव, नीतिगत प्रश्न और पूरक प्रश्न पूछकर सरकार पर नियन्त्रण करने का कार्य करते हैं।
- लोगों का ऐसा संगठित समूह, जिसमें सम्मिलित सभी सदस्य समान राजनीतिक विचारधारा में विश्वास रखते हैं, उन्हें राजनीतिक दल कहते हैं।
- भारत के निर्वाचन आयोग द्वारा विभिन्न राज्यों में समय-समय पर हुए चुनाव परिणामों की समीक्षा के उपरान्त यह निर्णय किया जाता है कि कौन सा दल राष्ट्रीय है।
- भारतीय निर्वाचन आयोग में जून 2019 ई. तक भारतीय जनता पार्टी (भाजपा), भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (आई.एन.सी.), तृणमूल कांग्रेस, बहुजन समाज पार्टी (बसपा), नेशनल पीपुल्स पार्टी, भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी, भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) और राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी राष्ट्रीय दल के रूप में पंजीकृत हैं।
- ऐसे राजनीतिक दल, जिनका प्रभाव किसी क्षेत्र या राज्य विशेष में हो क्षेत्रीय दल कहलाते हैं। ऐसे राजनीतिक दल को चुनाव आयोग द्वारा क्षेत्रीय राजनीतिक दलों को चुनाव चिन्ह के साथ मान्यता प्रदान की जाती है।
- भारत में समाजवादी पार्टी, अपना दल, राष्ट्रीय जनता दल, जनतादल, आम आदमी पार्टी, तेलगुदेशम पार्टी, द्रविड मुनेत्र कडगम, अन्ना द्रविड मुनेत्र कडगम, शिवसेना आदि प्रमुख क्षेत्रीय दल हैं।

यत्र विश्वं भवत्येकनाडिम्



## अध्याय- 16

### न्यायपालिका

- महाभारत और मनुस्मृति में न्याय के बारे में उल्लेख है कि- "धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति: रक्षितः। तस्माद्धर्मो न हन्तव्यो मा नो धर्मो हतोऽवधीत॥" (8-15) एवं (वन पर्व 313-128) अर्थात् रक्षित धर्म, रक्षक की रक्षा करता है। रेखांकित पंक्ति भारतीय विदेशी खुफिया विभाग का ध्येय वाक्य है।
- न्याय की अवधारणा प्रत्येक कानून को सामाजिक मूल्यों से परिपूर्ण करती है। भारत में न्याय प्रदान करने के लिए त्रि-स्तरीय निष्पक्ष एवं स्वतन्त्र न्याय पालिका कि स्थापना की गई है।
- भारत की न्यायपालिका का उपबन्ध संविधान के भाग 14 में अनुच्छेद 124 से 147 तक है।
- हमारे देश में न्यायपालिका नागरिकों, राज्य सरकारों व केन्द्र राज्य सरकारों के आपसी विवादों को हल करती है।
- यदि न्यायपालिका को ऐसा लगे की, सरकार द्वारा बनाया गया कानून हमारे संविधान के आधारभूत ढांचे के विरुद्ध है, तो वह उसे निरस्त कर सकती है, इसे न्यायिक समीक्षा कहा जाता है। न्यायिक समीक्षा को न्यायपालिका की सर्वोच्च शक्ति माना जाता है।
- यदि हमारे देश के किसी नागरिक को ऐसा लगता है कि उसके मौलिक अधिकारों का हनन हुआ है, तो वह सर्वोच्च न्यायालय में अपील कर सकता है। न्यायालय उसे उसका खोया हुआ अधिकार प्रदान करवायेगा।
- हमारे देश में न्यायापालिका की शीर्ष इकाई सर्वोच्च न्यायालय है, जो नई दिल्ली में स्थित है। इसे अंतिम अपीलीय न्यायालय भी कहते हैं।
- सर्वोच्च न्यायालय के कार्य सञ्चालन के लिए एक मुख्य न्यायाधीश होता है जिसकी नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा की जाती है। मुख्य न्यायाधीश की परामर्श से राष्ट्रपति अन्य न्यायाधीशों की नियुक्ति करता है। वर्तमान में सर्वोच्च न्यायालय में न्यायाधीशों की सङ्ख्या 31 है।
- सर्वोच्च न्यायालय का न्यायाधीश अपने पद पर 65 वर्ष की आयु तक कार्य कर सकता है। स्वयं के त्याग पत्र से या महाभियोग द्वारा समय से पूर्व भी हटाया जा सकता है।
- सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश को रुपये 2,80,000/- तथा अन्य न्यायाधीशों को रुपये 2,50,000/- वेतन एवं भत्ता प्रतिमाह भारत की संचित निधि से प्रदेय हैं।
- प्रारम्भिक क्षेत्राधिकार के अन्तर्गत मूल अधिकारों का हनन सम्बन्धी विवाद, केन्द्र राज्य सरकारों के विवाद और राज्य सरकारों के आपसी विवाद आते हैं।
- अपीलीय क्षेत्राधिकार के अन्तर्गत संवैधानिक मुद्दे (संविधान की व्याख्या सम्बन्धी प्रश्न), दीवानी मामले (जमीन-जायदाद, खरीददारी, विवाह, तलाक, किराया आदि मामले), फौजदारी मामले (चोरी, हत्या, अपराध डकैती आदि के मामले) आदि आते हैं।

- सरकार द्वारा निर्मित ऐसा कानून जो संविधान के विरुद्ध हो सर्वोच्च न्यायालय, उसे अवैध घोषित कर सकता है। इसे न्यायिक पुनरावलोकन कहते हैं।
- सर्वोच्च न्यायालय के निर्णयों को प्रकाशित किया जाता है तथा इनका प्रयोग आने वाले मुकदमों में कानून की भाँति किया जाता है इसलिए इसे अभिलेखीय न्यायालय भी कहते हैं।
- भारत के प्रत्येक राज्य में अलग से या संयुक्त रूप से उच्च न्यायालय की स्थापना की गई है। उच्च न्यायालयों में मुख्य न्यायाधीश सहित अन्य न्यायाधीश होते हैं।
- वर्तमान में उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश को रुपये 2,50,000/- तथा अन्य न्यायाधीशों को रुपये 2,25,000/- प्रतिमाह वेतन एवं अन्य भत्ते प्रदेय हैं।
- हमारे देश में स्थानीय स्तर पर दो प्रकार के न्यायालय होते हैं- नागरिक (सिविल) न्यायालय और राजस्व न्यायालय। नागरिक न्यायालय में दीवानी और फौजदारी के मामलों की सुनवाई की जाती है। राजस्व न्यायालय में राजस्व सम्बन्धी मामलों की सुनवाई होती है।
- आज भी विवादों का निराकरण के लिए देश भर में जिला स्तर पर लोक अदालतों की स्थापना प्रत्येक जिले में की गई है।
- ऐसी याचिका जिससे सार्वजनिक हित की रक्षा हो रही हो उसे जनहित याचिका कहते हैं। जनहित याचिका किसी भी नागरिक, संस्था, या स्वयं न्यायालय द्वारा पीड़ित के पक्ष में दायर की जा सकती है। जनहित याचिका की भारत में शुरुआत 1980 के दशक में न्यायाधीश पी. एन. भगवती द्वारा की गई।
- ऐसे नागरिक जिनकी वार्षिक आय 12,500/- से कम है, उनको विधिक सहायता कोष से निःशुल्क परामर्श मिलता है। समाज के कमजोर वर्गों को न्याय दिलाने के लिए प्रत्येक अदालत में इसकी स्थापना की गई है।
- घरेलू हिंसा से महिलाओं की सुरक्षा के लिए भारत की संसद द्वारा एक कानून बनाया गया है, जिसे घरेलू हिंसा महिला संरक्षण अधिनियम- 2005 के नाम से जाना जाता है।
- किसी भी अपराध की सूचना सर्वप्रथम पुलिस को लिखित या मौखिक रूप में दी जाती है, उसे प्रथम सूचना रिपोर्ट (एफ. आई. आर.) कहते हैं।
- केन्द्र सरकार को कानूनी सलाह देने व उसका पक्ष रखने के लिए अटॉर्नी जनरल (महान्यायवादी) व सॉलीसिटर होते हैं।

## अध्याय- 17

### जनसुविधाएँ

- भोजन, वस्त्र, आवास, स्वास्थ्य और जल आदि मानव जीवन की बुनियादी आवश्यकताएँ हैं, इन मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति को जनसुविधाएँ कहा जाता है।
- भारतीय संविधान में जल, स्वास्थ्य और शिक्षा आदि को जीवन का अधिकार माना है।
- प्राचीन भारत में जनसुविधा की दृष्टि से राजा द्वारा अपने राज्य में पेयजल के लिए कुएं, बावड़ी, तालाब, सड़कों के किनारे छायादार वृक्ष, मन्दिर एवं धर्मशालाओं आदि का निर्माण करवाते थे।
- राजाओं द्वारा अकाल व महामारियों के समय अपनी प्रजा की आर्थिक सहायता करते थे। जन सामान्य भी अपने द्वार से कभी याचक को निराश नहीं जाने देते थे। हमारे वैदिक वाङ्मय में दान की महत्ता प्रतिपादित की गई है।
- पुरातन काल में महर्षि दधीचि, राजा रघु, कर्ण एवं राजा हर्ष आदि ने जनहितार्थ के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया था।
- ऋग्वेद में संकेत मिलता है कि- "पुमान् पुमांसं परि पातु विश्वतः।" (6.75.14) अर्थात् एक व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति की हर प्रकार से हर संभव सहायता या रक्षा करनी चाहिए। "आ चर्षणिप्रा वृषभो जनानां।" (1.177.1) अर्थात् सरकार (राजा) जनकल्याण हेतु प्रजा के लिए सुखों की वर्षा करने वाला हो।
- भारत में प्राचीनकाल से ही जनकल्याणकारी कार्य राजा और प्रजा द्वारा सार्वजनिक रूप से सम्पादित किए जाते थे, जो आंशिक ही, आज भी दान और धर्मार्थ कार्य के रूप में देखे जा सकते हैं।
- जो सुविधाएँ बड़े नगरों में लोगों को आसानी से उपलब्ध कराई जाती हैं, वह उच्च जनसुविधाएँ कहलाती हैं जैसे- विद्युत्, पानी, विद्यालय, महाविद्यालय एवं चिकित्सालय इत्यादि।
- जिन सुविधाओं को किसी गाँव/कस्बे आदि में उपलब्ध कराया जाता है, उन्हें मध्यम जनसुविधाएँ कहा जाता है जैसे- उच्च माध्यमिक विद्यालय, प्राथमिक चिकित्सा केन्द्र आदि।
- जिन सुविधाओं को किसी संस्था या समुदाय के लोगों के लिए उपलब्ध कराया जाता है, उन्हें निम्न जनसुविधाएँ कहा जाता है जैसे- आंगनबाड़ी, प्राथमिक विद्यालय आदि।
- एक जगह से दूसरी जगह वस्तुओं का आदान-प्रदान करने वाली सुविधा को चल जनसुविधाएँ कहते हैं जैसे- डाकघर, कचरा गाड़ी आदि।
- लोक कल्याण एवं जनसुविधाओं का विकास करने का कार्य केन्द्र व राज्य सरकारें कर रही हैं। संविधान में इन कार्यों का उल्लेख समवर्ती सूची में है।
- जनसुविधाओं एवं लोक कल्याण के कार्यों के लिए बजट का आवंटन केन्द्र सरकार या राज्य सरकारों या दोनों के द्वारा किया जाता है।

- राज्य सरकार को इन योजनाओं के लिए बजट प्राप्त करने के लिए कार्य-सूची और लागत बजट को केन्द्र सरकार के समक्ष प्रस्तुत करना पड़ता है। केन्द्र सरकार की स्वीकृति होने पर राज्य सरकार इन कार्यों को करती है।
- भारत सरकार द्वारा 2024 ई. तक ग्रामीण भारत के लिए स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराने के लिए अगस्त ई. 2019 में जल जीवन मिशन (JJM) का शुभारम्भ किया था। इस योजना के अन्तर्गत प्रति व्यक्ति प्रतिदिन की दर से 55 लीटर जल उपलब्ध कराना है।
- स्वच्छता सेवाओं में सुधार और विस्तार के लिए केन्द्र सरकार ने 2 अक्टूबर 2014 ई. को स्वच्छ भारत मिशन की शुरूआत की थी।
- स्वच्छ भारत मिशन का मुख्य उद्देश्य ठोस कचरा प्रबन्धन, ग्रामीण व नगरीय क्षेत्रों में स्वच्छता सुविधाओं को बढ़ाकर, 2019 ई. तक खुले में शौच से मुक्ति दिलाना था इसलिए घर-घर शौचालय निर्माण के लिए, सरकार, नागरिकों को आर्थिक सहायता प्रदान कर रही है।
- स्वच्छ भारत मिशन के अन्तर्गत अक्टूबर 2014 ई. से दिसम्बर 2021 तक ग्रामीण भारत में 10.86 करोड़ से अधिक शौचालयों का निर्माण किया गया है।
- स्वच्छता सर्वेक्षण 2021 ई. के अनुसार भारत का सर्वाधिक स्वच्छ राज्य छत्तीसगढ़ है। स्वच्छता सर्वेक्षण 2021 ई. के अनुसार भारत का सर्वाधिक स्वच्छ नगर इन्दौर है।

## परिशिष्ट - राज्य, उनकी राजधानी, जिलों की संख्या, क्षेत्रफल एवं जनसंख्या

क्र.	राज्य	राजधानी	जिलों की संख्या	क्षेत्रफल वर्ग कि.मी. में	जनसंख्या
1.	आंध्र प्रदेश	हैदराबाद	26	2,75,060	8,46,53,533
2.	अरुणाचल प्रदेश	ईटानगर	19	83,743	13,82,611
3.	असम	दिसपुर	35	78,438	3,11,69,272
4.	बिहार	पटना	38	94,163	10,38,04,637
5.	छत्तीसगढ़	रायपुर	32	1,36,034	2,55,40,196
6.	गोवा	पणजी	02	3,702	14,57,723
7.	गुजरात	गाँधी नगर	35	1,96,024	6,03,83,628
8.	हरियाणा	चंडीगढ़	22	44,212	2,53,53,081
9.	हिमाचल प्रदेश	शिमला	12	55,673	68,56,509
10.	झारखण्ड	राँची	24	79,714	3,29,66,238
11.	कर्नाटक	बंगलोर	30	1,91,791	6,11,30,704
12.	केरल	तिरूवनंथपुरम्	14	38,863	3,33,87,677
13.	मध्य प्रदेश	भोपाल	50	3,08,000	7,25,97,565
14.	महाराष्ट्र	मुंबई	36	3,07,713	11,23,72,972
15.	मणिपुर	इम्फाल	09	22,327	27,21,756
16.	मेघालय	शिलांग	11	22,327	29,64,007
17.	मिजोरम	आइजौल	08	21,081	10,91,014
18.	नागालैंड	कोहिमा	12	16,579	19,80,602
19.	ओडिशा	भुवनेश्वर	30	1,55,707	4,19,47,358
20.	पंजाब	चंडीगढ़	23	50,362	2,77,04,236
21.	राजस्थान	जयपुर	33	3,42,239	6,86,21,012
22.	सिक्किम	गंगटोक	04	7,096	6,07,688
23.	तमिलनाडु	चेन्नई	38	1,30,058	7,21,38,958
24.	त्रिपुरा	अगरतला	08	10,49,169	36,71,032
25.	उत्तराखण्ड	देहरादून	13	53,484	1,01,16,752
26.	उत्तरप्रदेश	लखनऊ	75	2,38,566	19,95,81,477
27.	पश्चिम बङ्गाल	कोलकाता	23	88,752	9,13,47,736
28.	तेलंगाना	हैदराबाद	33	1,14,840	3,51,93,978

क्र.	केन्द्र शासित राज्य	राजधानी	जिल्लों की संख्या	क्षेत्रफल वर्ग कि.मी. में	जनसंख्या
1.	अंडमान और निकोबार द्वीप समूह	पोर्ट ब्लेयर	3	8,249	3,79,944
2.	चंडीगढ़	चंडीगढ़	1	114	10,54,686
3.	दादर और नागर हवेली दमन और दीव	दमन	3	603	5,85,764
4.	जम्मू और कश्मीर	श्रीनगर	20	2,22,236	1,25,00,000
5.	राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली	दिल्ली	9	1,483	1,67,53,235
6.	लक्षद्वीप	कवरत्ती	1	32	64,429
7.	पुदुच्चेरी	पुदुच्चेरी	4	492	12,44,464
8.	लद्दाख	लेह	2	1,66,698	2,74,289



# महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन (म.प्र.)

(शिक्षा मन्त्रालय, भारत सरकार )

द्वारा सञ्चालित एवं प्रस्तावित राष्ट्रीय आदर्श वेद विद्यालय



महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन (म.प्र.)

(शिक्षा मन्त्रालय, भारत सरकार )

वेदविद्या मार्ग, चिन्तामण, पो. ऑ. जवासिया, उज्जैन - ४५६००६ (म.प्र.)

Phone : (0734) 2502266, 2502254, E-mail : msrvvpujn@gmail.com, website - www.msrvvp.ac.in